

# डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 20, जॉन 20:1-21:25

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 20 है, यीशु पुनर्जीवित हो गए और शिष्यों के सामने प्रकट हुए। यूहन्ना 20:1-21:25.

नमस्ते, यह जॉन के सुसमाचार पर हमारा अंतिम वीडियो है। इस वीडियो में, हम जॉन अध्याय 20 और 21 को देखेंगे और हमारे प्रभु यीशु के पुनरुत्थान का अनुसरण करेंगे और शिष्यों के सामने उनके पुनरुत्थान की उपस्थिति देखेंगे। मुख्य रूप से अध्याय 21 को देखें जहां वह शिष्यों के सामने प्रकट होता है और पतरस के साथ बातचीत करता है, मुझे यकीन है कि यह बहुत आवश्यक था लेकिन उस समय पतरस के लिए यह बहुत असुविधाजनक था।

इसलिए, हम बहुत आभारी हैं कि हमने अपने अंतिम वीडियो के अंत में यीशु को दफनाया हुआ छोड़ दिया था, लेकिन अब इस वीडियो की शुरुआत में, हम उसके दफन से सीधे उसके पुनरुत्थान की ओर बढ़ने में सक्षम हैं। इस प्रस्तुति के लिए कवर स्लाइड में इस बात की बहुत दिलचस्प व्याख्या है कि उस दिन कैसा रहा होगा जब कब्र के चारों ओर रोमन गार्ड किसी तरह उस आभा से स्तब्ध हो जाते हैं जो तब होता है जब देवदूत कब्र से चट्टान खींचते हैं। मुझे इस बात पर बहुत संदेह है कि कब्र वास्तव में ऐसी दिखती थी, वास्तव में यह वह मुद्दा नहीं है जो मैं यहां इसके साथ बना रहा हूं।

मुझे इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि क्या वहां मौजूद लोगों ने बिल्कुल वैसी ही कोई आभा देखी होगी या क्या इससे आपको यह आभास होगा कि यीशु को बाहर निकालने के लिए देवदूत को पत्थर हटाना पड़ा था। मुझे आश्चर्य है कि क्या पत्थर को यीशु के बाहर निकालने के लिए हटाया गया था, मुझे इस पर संदेह है, मुझे लगता है कि पत्थर को इसलिए हटाया गया था ताकि बाहर के लोग देख सकें कि वह अब वहां नहीं है। मुझे नहीं लगता कि पुनरुत्थान के चमत्कार को एक किकस्टार्ट की आवश्यकता है, यदि आप चाहें, तो कब्र खोलने वाले देवदूत के कार्य से।

मुझे यकीन नहीं है कि बाइबिल का पाठ किसी न किसी तरह से इस पूरे प्रश्न के बारे में बिल्कुल स्पष्ट है, लेकिन यह सोचने लायक है, है ना? क्या यीशु को बाहर निकालने के लिए पत्थर को लुढ़काया गया था, मुझे ऐसा नहीं लगता, बल्कि पत्थर को इसलिए लुढ़काया गया था ताकि बाकी सभी लोग यह देख सकें कि वह पहले ही चमत्कारिक ढंग से पुनर्जीवित हो चुका है। जैसा भी हो, हम पहले यहां प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 में विचार के प्रवाह को देखेंगे और फिर हम वापस आएंगे और यहां शामिल कुछ भौगोलिक मुद्दों के साथ-साथ अन्य धार्मिक रूप से उन्मुख मामलों को देखेंगे। तो, हम यहां ईस्टर रविवार के बारे में पढ़ रहे हैं और सबसे पहले, हमें खाली कब्र की खोज करनी है।

तो, हम इसे यहां जॉन अध्याय 20 और श्लोक 1 से उठाना शुरू करते हैं, सप्ताह के पहले दिन की शुरुआत में जब अभी भी अंधेरा था, मैरी मैग्डलीन ने जाकर देखा कि पत्थर को प्रवेश द्वार से

हटा दिया गया था। इसलिए, जाहिर तौर पर वह आगे नहीं बढ़ीं। वह दौड़ती हुई पतरस के पास गई और स्थिति की व्याख्या करते हुए, उसने पतरस और उसके प्रिय शिष्य को समझाया कि उन्होंने प्रभु को कब्र से बाहर निकाल लिया है।

यह दिलचस्प है कि जिस तरह से यीशु ने अपने पुनरुत्थान, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की थी, उसके प्रकाश में, सिनोप्टिक परंपरा में यह स्पष्ट रूप से जॉन के सुसमाचार में हमने अब तक जो देखा है उससे कहीं अधिक स्पष्ट है। हमने उसके तीन दिन बाद मृतकों में से जीवित होने की कोई विशेष भविष्यवाणी नहीं देखी है। यह और अधिक हो गया है, मैं तुम्हें फिर से देखूंगा।

मैं थोड़ी देर के लिए चला जाऊंगा, थोड़ी देर के लिए तुम मुझे नहीं देखोगे, और फिर थोड़ी देर के लिए तुम मुझे फिर से देखोगे। और हमारे पास अध्याय 2 में, निश्चित रूप से, इस मंदिर को नष्ट करने का संदर्भ है और तीन दिनों में मैं इसे मंदिर को साफ़ करने के संदर्भ में फिर से उठाऊंगा। और निस्संदेह, संपादकीय टिप्पणी यह है कि पुनरुत्थान के बाद शिष्यों को पता चल गया कि वह किस बारे में बात कर रहे थे, लेकिन जाहिर तौर पर उन्हें समय से पहले पता नहीं चला।

तो, मैग्दलीन चिंतित थी कि शव चला गया था और सोच रही थी कि किसी ने इसे चुरा लिया है। इसलिए, पतरस और दूसरा शिष्य, जो प्रिय शिष्य होगा, कब्र की ओर भागे। यदि हम जॉन के रूप में प्रिय शिष्य की पहचान करने में सही हैं, तो जॉन ने पीटर को कब्र तक पीटा, लेकिन कब्र तक पहुंच गया, लेकिन जाहिर तौर पर वहां झुककर खड़ा रहा, अंदर देखा।

पीटर बाद में दौड़ता हुआ आया। शायद वह ठीक हालत में नहीं था, मुझे नहीं पता, लेकिन वह सीधे कब्र में गया और उन दोनों ने दफ़न के कपड़े, उस दिन शवों को बांधने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली लिनेन की पट्टियाँ देखीं। उन दोनों ने वहाँ वह सब कुछ पाया, और सिर का कपड़ा भी बिछा हुआ था, और वह सनी के कपड़े से अलग था।

तो अंततः, प्रिय शिष्य अंदर गया और पाठ अध्याय 20 श्लोक 8 में कहता है, उसने देखा और विश्वास किया। मूल टिप्पणी, वे अभी भी धर्मग्रंथ से यह नहीं समझ पाए कि यीशु को मृतकों में से जीवित करना था। फिर वे जहाँ ठहरे थे वहाँ वापस चले गये।

जाहिर है, फिर पीटर और प्रिय शिष्य चले गए, लेकिन मैरी अभी भी वहीं है। तो, श्लोक 11 से 18 में, हम कहानी का अगला भाग देखते हैं, कैसे यीशु मैरी के सामने प्रकट होते हैं और उसे एक प्रकार का कमीशन देते हैं जिसके तहत वह चाहते हैं कि वह दूसरों को बताएं। तो, जैसा कि हम सामग्री के इस भाग को देखते हैं, मैरी को दो स्वर्गदूतों द्वारा देखा जाता है, वह दो स्वर्गदूतों को देखती है और वह उनसे कहती है, वे मेरे प्रभु को ले गए हैं और वे उससे कहते हैं, तुम क्यों रो रही हो? क्षमा करें, वह मुड़ती है और देखती है कि एक व्यक्ति जिसे वह नहीं पहचानती, वह यीशु है।

तो, वह उससे कहता है, तुम क्यों रो रही हो? तुम किसे ढूँढ रहे हो? वह उसे माली समझकर बोली, हुजूर, अगर तुम उसे ले गए हो तो बताओ उसे कहां रखोगे, मैं उसे ले आऊंगी। किसी तरह असमंजस में, उसे लगा कि यीशु के लापता शरीर को किसी ने हटा दिया है, इस व्यक्ति को वह

अभी तक नहीं पहचानती थी, उसने सोचा कि शायद यह वही व्यक्ति है जिसने शरीर को हटा दिया था। तो, उसने पद 16 में उससे बस इतना ही कहा, बस उसका नाम, मैरी, उपयोग करें।

किसी तरह से वह अपनी समझ की कमी से बाहर आई और उसकी आवाज़ सुनकर, वह उसकी ओर मुड़ी और अरामी में चिल्लाई, रब्बोनी, जिसका अर्थ है शिक्षक। उस समय, यीशु कहते हैं, मुझे पकड़ने की कोशिश मत करो क्योंकि मैं अभी तक पिता के पास नहीं गया हूँ, बल्कि मेरे भाइयों के पास जाओ और उन्हें बताओ। दिलचस्प बात यह है कि यीशु अपने शिष्यों को अपने भाई के रूप में संदर्भित करते हैं।

उनसे कहो कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूँ। फिर, यहां एक दिलचस्प अंतर है, न केवल मैं भगवान के पास चढ़ रहा हूँ या मैं अपने भगवान के पास चढ़ रहा हूँ, बल्कि मैं अपने भगवान और आपके भगवान, मेरे पिता और आपके पिता के पास चढ़ रहा हूँ। हालाँकि, उसी समय, यीशु कहते हैं, जाकर मेरे भाइयों से कहो, जाकर मेरे भाइयों से कहो।

तो, एक दिलचस्प तरीका है जिसमें पाठ की भाषा यीशु को उसके लोगों से जोड़ती है, लेकिन उसे लोगों से अलग भी करती है। इसलिये मरियम यह समाचार लेकर चेलों के पास गयी। उस ने कहा, मैं ने प्रभु को देखा है, और उस ने जो कुछ उस ने उस से कहा था, वह सब उन से कह सुनाया।

तो जाहिर तौर पर अगले सप्ताह, पद 19, हमें बताया जाता है कि एक सप्ताह बाद शायद सप्ताह के पहले दिन, या बाद में उसी दिन सप्ताह के पहले दिन की शाम को बताया जाता है? हो सकता है वही शाम हो। यह थोड़ा अस्पष्ट है। यीशु शिष्यों को दर्शन देने जा रहे हैं।

तो, श्लोक 19 से 23 में, सप्ताह के उस पहले दिन की शाम को, जब शिष्य यहूदी नेताओं के डर से दरवाजे बंद करके एक साथ थे, यह एक दिलचस्प छोटा सा अंश है, कि क्या पहले से ही उनकी जांच की जा रही थी धार्मिक नेताओं को अपनी गतिविधि के कारण छिपने की आवश्यकता थी या क्या वे सिर्फ इस बात से चिंतित थे कि यहूदी नेता उन्हें ढूँढ लेंगे। मुझे लगता है कि हम किसी न किसी तरह से यह निश्चित रूप से नहीं जानते हैं। वे संकटग्रस्त स्थिति में छिपकर मिल रहे थे, परन्तु चमत्कारिक रूप से, प्रत्यक्षतः, यीशु आया और उनके बीच खड़ा हो गया और कहा, तुम्हें शांति मिले।

यह कहने के बाद, उसने उन्हें अपने हाथ दिखाए और आह भरी। जब शिष्यों ने प्रभु को देखा तो वे बहुत प्रसन्न हुए। उस ने फिर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले।

जैसे पिता ने मुझे भेजा, वैसे ही मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। तो यहाँ हमारे पास पाठ में दूसरा आयोग है। पहले में, मैरी को शिष्यों को यह बताने का आदेश दिया गया है कि वे समझते हैं ताकि वे समझ सकें कि यीशु वास्तव में मृतकों में से जी उठे हैं।

दूसरे आयोग में, शिष्यों को स्वयं पवित्र आत्मा से सुसज्जित किया जाता है और फिर सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजा जाता है। तो, यीशु कहते हैं, तुम्हें शांति मिले। जैसे पिता ने मुझे भेजा, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।

यह तब पिता के एजेंट के रूप में यीशु और यीशु के एजेंट के रूप में शिष्यों और निहितार्थ द्वारा यीशु को भेजने वाले पिता के बीच एक सादृश्य बनाना होगा। अपने दूतों के रूप में भेजे जाने के रूप में उन्हें अपने काम के लिए तैयार करने के लिए, वह उन पर साँस छोड़ता है और कहता है, पवित्र आत्मा प्राप्त करो। यदि आप किसी के पापों को क्षमा करते हैं, तो उनके पाप भी क्षमा हो जाते हैं।

यदि आप उन्हें क्षमा नहीं करते तो वे भी क्षमा नहीं किये जाते। मुझे लगता है कि इससे हमें पता चलता है कि यीशु के दूत होने के नाते, हमारा मिशन मानवीय जरूरतों के लिए दयालुतापूर्वक देखभाल करने और लोगों को उनकी स्पष्ट जरूरतों और सामाजिक समस्याओं से निपटने में मदद करने के संदर्भ में है, यदि हमारा मंत्रालय एक संदेश का प्रचार करने पर केंद्रित नहीं है क्रूस के बारे में जिसका संबंध पापों की क्षमा से है, हम कुछ अत्यंत प्रशंसनीय मानवीय एजेंसियों से बहुत अलग नहीं हैं जो अच्छा काम करते हैं लेकिन यीशु के नाम पर या क्रूस की शक्ति के साथ ऐसा नहीं करते हैं जैसा कि इसका आधार. तो, यीशु फिर उन्हें कुछ अर्थों में पवित्र आत्मा प्रदान करते हैं।

यह समझने के लिए एक कठिन पाठ है कि इसे अपने आप में जोहानाइन न्यूमेटोलॉजी के प्रकाश में कैसे देखा जाए, लेकिन विशेष रूप से जब हम यहां जोहानिन न्यूमेटोलॉजी की तुलना उस तरीके से करते हैं जिसमें आत्मा प्रदान की जाती है, उदाहरण के लिए, ल्यूक-एक्ट्स में जहां हम पिनतेकुस्त का दिन है. तो, हम थोड़ी देर बाद उन विभिन्न तरीकों के बारे में बात करेंगे जिनसे हम इसे समझ सकते हैं। तो, थॉमस नाम का एक शिष्य इस बैठक में नहीं था, और इसलिए एक हफ्ते बाद थॉमस के साथ एक बहुत ही उल्लेखनीय घटना घटी।

यह कहता है, थॉमस, जिसे डिडिमस के नाम से भी जाना जाता है, अध्याय 20 श्लोक 24, यीशु के आने पर शिष्यों के साथ नहीं था। इसलिए, मुझे लगता है कि यहां जो समस्या उत्पन्न होती है वह तब होती है जब आप स्वयं को संतों के साथ एकत्रित नहीं करते हैं, शायद। आइए यह सुनिश्चित करें कि हम ऐसा करें ताकि हम थॉमस की तरह न बनें।

तो, अन्य शिष्यों ने उससे कहा, हमने प्रभु को देखा है, लेकिन थॉमस को यह नहीं मिल रहा था। थॉमस ने कहा, जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के निशान नहीं देख लेता और जहां कीलें थीं वहां अपनी उंगली नहीं डाल देता और अपने हाथ उसकी बगल में नहीं डाल देता, मुझे इस पर विश्वास नहीं होगा. इसलिए, एक सप्ताह बाद उसके शिष्य फिर से घर में थे, पद 26, थॉमस उनके साथ था।

हालाँकि दरवाज़े बंद थे, यीशु आया और उनके बीच खड़ा हो गया और कहा, तुम्हें शांति मिले, जैसा कि उसने पिछली बार पद 19 और पद 21 में प्रकट होकर कहा था। तब उसने थॉमस से कहा, जो कि पूरी तरह से प्रकट हुआ था थॉमस ने तब कहा था जब यीशु वहां नहीं थे, फिर भी

यीशु को पता है कि थॉमस ने क्या कहा था, उन्होंने थॉमस से कहा, अपनी उंगली यहां रखो, मेरे हाथ देखो, अपना हाथ बढ़ाओ, इसे मेरे बगल में डाल दो, संदेह करना बंद करो और विश्वास करो। हमें यह नहीं बताया गया है कि क्या थॉमस ने यीशु को अंकित मूल्य पर लिया था और वास्तव में अपने हाथों और अपनी उंगलियों से उसके शरीर की जांच की थी।

जाहिर है, उसने ऐसा नहीं किया। पाठ नहीं कहता. जाहिरा तौर पर, थॉमस ने जो देखा उससे इतना आश्चर्यचकित हुआ कि उसने बस कहा, मेरे भगवान और मेरे भगवान।

यह जॉन के सुसमाचार में चरम कथनों में से एक होगा जो उस बात की पुष्टि करता है जिस पर हमें संदेह है और पुस्तक की पहली कविता के बाद से हमारी समझ में वृद्धि हो रही है, कि शुरुआत में शब्द था, शब्द भगवान के साथ था और शब्द था भगवान. तो, यहां कुछ समावेशन है, एक साहित्यिक पुस्तक का अंत जहां पुस्तक इस बात की पुष्टि के साथ शुरू होती है कि शब्द ईश्वर था और अब थॉमस बस उस कथन की पुष्टि कर रहा है और पुष्टि कर रहा है कि अब से पहले कई स्थानों पर क्या हुआ है, कि यीशु वास्तव में एक अलौकिक है वह पहले से मौजूद व्यक्ति है जो पिता की महिमा को पृथ्वी पर लाने के लिए पिता की ओर से स्वर्ग से आया है। तब यीशु ने श्लोक 29 में यह उल्लेखनीय कथन दिया, क्योंकि तुमने मुझे देखा है, तुमने विश्वास किया है।

कभी-कभी इसे एक प्रश्न के रूप में विरामित किया जाता है। मुझे लगता है कि यह उतना ही स्पष्ट होगा। जब से तू ने मुझे देखा है, तब से क्या तू ने विश्वास किया है? यह जानना कठिन है कि इसे मूल भाषा में करने पर किसी भी तरह से विराम लगाया जा सकता है या नहीं।

तो, थॉमस का दृष्टि के आधार पर विश्वास में आना, यीशु को देखने के आधार पर, उन लोगों के साथ विरोधाभास है जिन्होंने इसके अलावा विश्वास किया है। इसके बाद यीशु ने इस एक व्यक्ति, थॉमस की घटना को एक कहावत के रूप में प्रस्तुत किया, जो विभिन्न तरीकों से यीशु में विश्वास करने वाले लोगों के लिए एक आशीर्वाद था। अतः धन्य हैं वे, जिन्होंने नहीं देखा और फिर भी विश्वास कर लिया।

इसलिए मेरा मानना है कि हर कोई थॉमस जैसा नहीं है, इसलिए अधिक अनुभवजन्य साक्ष्य की आवश्यकता है। कुछ लोग सुसमाचार के संदेश की शक्ति से ही आश्चर्य हो जाते हैं। तो यहां हमारे पास थोड़ी देर के लिए लाल अक्षरों में से अंतिम है, और इस बिंदु पर लेखक, प्रिय शिष्य, चीजों को संक्षेप में प्रस्तुत करता है और बॉक्स के चारों ओर एक रिबन खींचता है और इसे हमारे लिए लपेटता है, वास्तव में बहुत पीछे जाता है उस कथा के लिए जो अध्याय 1, श्लोक 19 से शुरू हुई है।

यूहन्ना का कहना है कि यीशु ने अपने शिष्यों के सामने और भी बहुत से चिन्ह दिखाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। वह कहते हैं, मैंने शायद और भी बहुत सी बातें कही होंगी और आपको यीशु के बारे में और भी बहुत सी कहानियाँ सुनाई होंगी। हालाँकि, मैंने ऐसा करना नहीं चुना।

मैंने बहुत सी चीज़ें छोड़ दीं। इसलिए, यीशु ने बहुत से ऐसे काम किए जो इस पुस्तक में दर्ज नहीं हैं, लेकिन ये इसलिए लिखे गए हैं ताकि आप विश्वास कर सकें कि यीशु मसीहा, परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करने से आप उसके नाम पर जीवन पा सकते हैं। मुझे लगता है, यह हमें अध्याय 1, छंद 12 और 13 में जॉन की प्रस्तावना की ओर ले जाता है, जहां पहली बार अद्भुत विडंबना सामने आती है, भले ही यीशु ने दुनिया बनाई थी और वह अपनी दुनिया में आए।, फिर भी उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।

खैर, यह कुछ हद तक अति सामान्यीकरण है क्योंकि जितने लोगों ने उसे प्राप्त किया, उन लोगों को उसने परमेश्वर की संतान होने के लिए अधिकृत किया, वे लोग जो उसके नाम पर विश्वास करते थे। इसलिए, हमारे यहां यीशु पर विश्वास करने की आवश्यकता पर जोर देने के साथ एक और प्रकार का समावेश है। फिर जॉन कहता है कि पुस्तक के अंत में, वह हमें वही बता रहा है जो वह शुरुआत में हमें बता रहा था, कि यह पुस्तक लोगों को विश्वास में लाने के लिए बनाई गई है।

कुछ लोगों ने इसका अर्थ यह निकाला है कि इसकी गणना उन लोगों के विश्वास को मजबूत करने के लिए की गई है जो पहले से ही यीशु में विश्वास करते हैं, और कुछ ऐसे भी हैं जो यहां उपवाक्य उपवाक्य में क्रिया के काल के साथ काम करते हैं। ये ऐसे लिखे गए हैं जिन पर आप विश्वास कर सकते हैं। कुछ लोगों ने इसका मतलब यह निकाला है कि आप विश्वास करते रहें।

मुझे यकीन नहीं है कि व्याख्यात्मक रूप से यह एक व्यवहार्य स्थिति है, कम से कम क्रिया काल के व्याकरण के आधार पर। लेकिन किसी भी घटना में, जब आप जॉन के सुसमाचार की सामग्री के बारे में सोचते हैं और आप इसकी तुलना इस कथन से करते हैं, तो जॉन का सुसमाचार निश्चित रूप से उस प्रकार की पुस्तक है जो लोगों को विश्वास में लाने के लिए शक्तिशाली है। लेकिन जब हम इसे वफादार लोगों के रूप में, यीशु में विश्वास करने वाले लोगों के रूप में पढ़ते हैं, तो निश्चित रूप से हमारा विश्वास मजबूत होता है।

इसलिए, मुझे यकीन नहीं है कि हमें इस तरह कार्य करना होगा कि यह या तो या तो वाला मामला है, और यदि आप एक दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो आप दूसरे को नहीं पकड़ सकते। निःसंदेह, दोनों सत्य हैं। हमने अपने परिचयात्मक व्याख्यान में गॉस्पेल विद्वानों के बीच एक मौजूदा दृष्टिकोण की ओर इशारा किया था कि गॉस्पेल सभी ईसाइयों के लिए लिखे गए थे, रिचर्ड बालकोम्बे द्वारा संपादित इसी नाम की पुस्तक, द गॉस्पेल्स फॉर ऑल क्रिस्चियन्स।

वह पुस्तक इस विचार पर जोर देने के लिए लिखी गई है कि सुसमाचार सभी ईसाइयों के लिए लिखे गए थे। सुसमाचार केवल चर्च के छोटे खंडों के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण चर्च के लिए लिखे गए थे। दूसरे शब्दों में, शुरू से ही उनका इरादा पूरे ज्ञात विश्व में ईसाइयों के बीच व्यापक रूप से प्रसारित करने का था।

शायद हालांकि उस किताब के बारे में जो कुछ सवाल खड़ा करता है, वह शीर्षक में ईसाई शब्द है, सभी ईसाइयों के लिए सुसमाचार। जैसा कि मैंने कहा, जॉन के सुसमाचार की निश्चित रूप से हमारे विश्वास को मजबूत करने में अपनी भूमिका है, और मुझे लगता है कि हम इसे पढ़ने और

इसके गहन निहितार्थों पर विचार करने से कभी नहीं थकते। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि सभी गॉस्पेल में से, जॉन के गॉस्पेल का भी निश्चित रूप से एक इंजीलवादी उद्देश्य है।

इसलिए, जॉन का सुसमाचार केवल सभी ईसाइयों के लिए लिखा गया सुसमाचार नहीं है, बल्कि मुझे लगता है कि यह सभी मनुष्यों के लिए, पूरी दुनिया के लिए यीशु को देखने और उस पर विश्वास करने के लिए लिखा गया सुसमाचार है। हममें से जो लोग विश्वास करते हैं, जब हम इस अद्भुत पुस्तक को पढ़ते हैं तो निश्चित रूप से हमारा विश्वास मजबूत हो सकता है। इसलिए, हमने यहां जॉन अध्याय 20 में विचार के प्रवाह का सर्वेक्षण किया है।

हम कुछ समय रुकना चाहते हैं और यहां उल्लिखित कुछ घटनाओं के बारे में भौगोलिक दृष्टि से सोचना चाहते हैं। हमने पहले भी इस मानचित्र का उपयोग किया है. अब हम इसका उपयोग आपको एक प्रश्न से परिचित कराने के लिए कर रहे हैं कि यीशु को कहाँ दफनाया गया होगा और पुनरुत्थान कहाँ हुआ था?

जाहिर है, हमारा विश्वास जीपीएस मशीन या उसके जैसी किसी चीज़ से इन मामलों का सटीक पता लगाने में सक्षम होने पर निर्भर नहीं है, लेकिन यह सोचना दिलचस्प है कि यह ऐतिहासिक रूप से कैसे काम करता होगा। तो, सबसे अधिक संभावना है, यीशु को पीलातुस के सामने अपना अंतिम परीक्षण यहीं पुराने शहर के पश्चिमी हिस्से में गवर्नर के महल में जाफ़ा गेट के दक्षिण में मिला होगा, जिसका उपयोग रोमनों द्वारा किया गया था, बाद में हेरोदेस के महल का उपयोग किया गया था। राज्यपाल. तो, वाया डोलोरोसा, सबसे अधिक संभावना है, अगर ऐसी कोई चीज़ होती, तो दुख का रास्ता शहर की दीवार के बाहर उत्तर की ओर होता, जहां आज चर्च ऑफ द होली सेपुलचर है।

परंपरागत रूप से, यीशु को मंदिर के उत्तर-पश्चिमी कोने में किले एंटोनिया में आजमाया गया था और पश्चिम की ओर, शायद थोड़ा दक्षिण की ओर, गोलगोथा के इस क्षेत्र, पवित्र सेपुलचर क्षेत्र के चर्च तक थोड़ी पैदल दूरी तय की गई थी। इसकी परंपरा कम से कम चौथी शताब्दी से चली आ रही है और जैसा कि हम थोड़ा आगे देखेंगे, चर्च ऑफ द होली सेपुलचर के घेरे के ठीक अंदर कब्रें हैं, जो पहली शताब्दी की हैं। फिर भी, इसके बारे में एक और दृष्टिकोण है, यह सोचकर कि यीशु को किले एंटोनिया से भी उत्तर की ओर दफनाया गया था, जो बाद में एक शहर की दीवारें रही होंगी, उत्तर की ओर जहां उस समय दीवारें थीं। गॉर्डन कैल्वरी नामक स्थान।

मैं समझता हूँ कि गॉर्डन कलवारी कहे जाने से पहले इस क्षेत्र को जेरेमिया का ग्रोटो कहा जाता था। इसलिए, जब हम इन चीजों की तुलना करना शुरू करते हैं, यरूशलेम के मानचित्र को देखते हुए, यदि यीशु पर एंटोनिया में मुकदमा चल रहा होता, जो मुझे नहीं लगता कि इसकी संभावना है, तो सूली पर चढ़ाए जाने की राह सबसे अधिक इसी दिशा में होती। हालाँकि, यदि वास्तव में जाफ़ा गेट के दक्षिण में, पश्चिम की ओर उस पर प्रयास किया गया होता, तो वह यहीं कहीं होता और चलना इसी दिशा में होता।

यदि हम गॉर्डन कैल्वरी और उससे जुड़ी साइट, गार्डन टॉम्ब के बारे में सोच रहे हैं, तो यह मानचित्र से बहुत ऊपर शहर की बाद की दीवारों के बाहर एक क्षेत्र में होगा, जो वर्तमान दमिश्क

के उत्तर में एक क्षेत्र है। यरूशलेम के पुराने शहर का द्वार। इसलिए, चित्रों को देखना और यह समझना दिलचस्प है कि लोग क्यों सोच रहे थे कि गॉर्डन की कलवारी वास्तव में वह जगह थी जहाँ यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। मुझे लगता है कि आप इसे यरूशलेम के उत्तर की ओर एक ढलान या चट्टान कह सकते हैं।

यह फिर से दमिश्क गेट के काफी करीब है जिसे 19वीं सदी के अंत में जेरेमिया का ग्रोटो कहा जाता था। जनरल गॉर्डन के अलावा अन्य लोगों ने इस जगह को देखा था और यह निर्धारित किया था कि यह संभवतः गोलगोथा हो सकता है, खोपड़ी का स्थान, सिर्फ इसलिए कि जिस तरह से वहां नरम चूना पत्थर का क्षरण हुआ था। वे प्रतीत होने वाली आंखों और नाक और मुंह को किसी चीज़ की तरह देख रहे थे, मुझे लगता है कि यदि आप इसे देखते हैं और अपनी कल्पना का उपयोग करते हैं, तो अन्य विशेषताओं को रोक दें जो आपके पुष्टिकरण पूर्वाग्रह के साथ उस व्याख्या के रास्ते में आती हैं जो पहले से ही दृढ़ता से स्थापित हैं। .

यदि आप एक खोपड़ी की तलाश में हैं, तो जाहिर तौर पर आप वहां एक खोपड़ी देख सकते हैं। तो यह जगह थी, जैसा कि आप देख सकते हैं, जो 19वीं सदी के अंत में काफी बंजर थी। 20वीं सदी के मध्य में, आप देख सकते हैं कि शीर्ष पर स्थित कब्रिस्तान, एक अरब कब्रिस्तान, अधिक स्पष्ट होता जा रहा था।

चट्टान की परतें काफी हद तक नष्ट हो रही थीं। आपको यहाँ ऊपर बहुत कम चट्टान दिखाई देती है जिसे लोग बायीं आँख कहेंगे। यहाँ आपको वहाँ थोड़ी अधिक चट्टान दिखाई देती है।

तो, चीज़ें बिखर रही थीं। आज भी येरुशलम आने वाले पर्यटक इस जगह को देखने आते रहते हैं। इस बीच, उन्होंने इसके ठीक नीचे एक बस स्टेशन बनाया है।

यह यहीं है. बेशक, अभी भी आपके पास यरूशलेम में कब्रिस्तान की इमारतें और आधुनिक इमारतें हैं। मुझे लगता है कि इसका अधिक क्लोज़-अप संस्करण आपको यह देखने में मदद करेगा कि शायद आप इसे खोपड़ी की जगह के रूप में क्यों सोच सकते हैं।

लोगों का एक अच्छा समूह है जो इसकी देखरेख कर रहे हैं या इसे चला रहे हैं। वे यह दावा नहीं करेंगे कि यीशु को वास्तव में वहाँ क्रूस पर चढ़ाया गया था या पास की कब्र वह स्थान थी जहाँ उसे दफनाया गया था। वे आपको बताएंगे कि यह कुछ इस तरह दिखता होगा।

उनके सोचने के तरीके के अनुसार, इसे अधिक प्राकृतिक सेटिंग में देखना खुद को याद दिलाने का एक बेहतर तरीका है कि उन घटनाओं में क्या हुआ था। निःसंदेह, जब हम पवित्र सेपुलचर चर्च को देखते हैं, तो यह बिल्कुल वैसा नहीं है जैसा यह उस समय दिखता होगा। तो, बगीचे का मकबरा, जो तथाकथित गॉर्डन कैल्वरी के पश्चिम में कुछ सौ गज की दूरी पर है, इस तरह दिखता है।

इसकी विभिन्न प्रकार से व्याख्या की गई है। जो लोग सोचते हैं कि यह वास्तव में यीशु की कब्र थी, वे यहां से इस चैनल को देखते हैं। वे कहते हैं कि यह वह जगह है जहां रोलिंग स्टोन ने प्रवेश द्वार को ढक दिया होगा।



हालाँकि, पुरातत्वविदों का मानना है कि यह चैनल बहुत बाद के समय से चला आ रहा एक सिंचाई चैनल था। जिसे वे कब्र कह रहे हैं, आप देख रहे हैं, उसे अवरुद्ध कर दिया गया है। यह सब एक समय में खुला था।

मुझे लगता है कि इसकी एक व्याख्या यह है कि यह पहले मंदिर के समय का बहुत पुराना कुंड है, ग्रीको-रोमन काल का बिल्कुल भी नहीं। टंकी के निर्माण के बाद पत्थर का खनन किया गया था। इसलिए, जब वे चट्टान को टुकड़े-टुकड़े करके बाहर निकाल रहे हैं, तो यह सभी ठोस चट्टानें होंगी, जब तक कि वे हौज के सामने नहीं आ जातीं।

वे जो कर रहे हैं, वह अनिवार्य रूप से टंकी की एक दीवार की खुदाई कर रहा है। तो, आपके पास यह अवरुद्ध क्षेत्र बच गया है। एक बार जब आप बगीचे के मकबरे के अंदर जाएंगे तो आपको कुछ ऐसा दिखाई देगा जो कुछ इस तरह दिखता है।

मैं अनुमान लगाता हूँ, यदि आप पहले से ही सोच रहे हैं कि यह वह स्थान है जहाँ यीशु को दफनाया गया था, तो आप कल्पना कर सकते हैं, वास्तव में यह वही था। इसके साथ समस्या यह है कि पुरातात्विक रूप से, इस साइट के लिए कोई भी सबूत नहीं है। यहाँ जो पुरातत्व किया गया है, वह इस बात की पुष्टि करता है कि यह दूसरा मंदिर स्थल नहीं था, जितना कि पहला मंदिर स्थल था, कम से कम मैं इसे समझता हूँ।

हमारे पास बहुत पहले से चली आ रही एक परंपरा है, इस तथ्य से कि पवित्र सेपुलचर चर्च वह स्थान है जहाँ यीशु को दफनाया गया था। यह बस परंपरा है। हम ठीक से नहीं जानते, लेकिन यह परंपरा एक प्राचीन परंपरा है।

जब हमने कुछ देर पहले यरूशलेम के अपने मानचित्र को देखा, तो यहाँ यह भूरे रंग का गुंबद मूल रूप से वही है जहाँ पवित्र सेपुलचर चर्च है। वहाँ वास्तव में दो गुंबद हैं, एक छोटा गुंबद जिसके नीचे खिड़कियाँ हैं, और एक बड़ा, चौड़ा गुंबद है। जब आप इमारत में पहुंचेंगे, तो आप इसे इस तरफ से देख रहे होंगे, और अन्य तस्वीरें भी होंगी।

आप दाईं ओर छोटा गुंबद और बाईं ओर बड़ा, चपटा गुंबद देखेंगे। ये क्रमशः, यीशु के सूली पर चढ़ने और यीशु के दफनाने के स्थान पर हैं। यदि आप यहाँ दरवाजे के अंदर जाते हैं और सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, तो आप इस क्षेत्र के अंतर्गत होंगे, जहाँ यीशु के कूस पर चढ़ाए जाने को समर्पित चैपल हैं।

यदि आप थोड़ा बाईं ओर जाते हैं, तो आप इस विशाल रोटुंडा में होंगे, जहाँ एडिक्यूल, जैसा कि इसे कहा जाता है, यीशु के दफन के क्षेत्र को कवर करता है। यहाँ पवित्र सेपुलचर चर्च के दरवाजे हैं। दाहिनी ओर वाला अवरुद्ध है।

यदि आप दाहिनी ओर मुड़कर अंदर जाते हैं और ऊपर जाते हैं, तो आप गुंबद के नीचे हैं, जो यीशु के सूली पर चढ़ने की याद दिलाता है। यदि आप दाहिनी ओर के गुंबद के नीचे हैं, बड़ा गुंबद, और आपके पास एक उपकरण है जहाँ आप ऊपर उड़ सकते हैं, तो आप यह तस्वीर ले

सकते हैं, मुझे लगता है। पवित्र समय के दौरान, यह क्षेत्र विभिन्न जुलूसों और ईसाइयों से पूरी तरह से खचाखच भर जाता है।

आप उस विशाल मीनार को देखते हैं जो उससे बाहर निकली हुई है। नीचे से देखने पर यह उतना ऊंचा नहीं दिखता है, लेकिन ऊपर से गुंबद कितना ऊंचा है इसका अंदाजा आपको भी है। आमतौर पर, जब आप पवित्र सेपुलचर चर्च में जाते हैं, तो लोग एडिक्यूल नामक चीज़ में जाने के लिए लंबी लाइनों में घूम रहे होते हैं।

यह एक तस्वीर है जो सामने से कैसी दिखती है। सामने से यह कैसा दिखता है इसकी एक बेहतर तस्वीर यहां दी गई है। आप एक तीर्थयात्री को उसी क्षेत्र में घुटने टेकते हुए देखेंगे जो यीशु की कब्र की याद दिलाता है।

यदि आपके कैमरे में फिशआई लेंस है, तो आप यह तस्वीर ले सकते हैं, यह इसी वसंत ऋतु, मार्च 2018 की एक हालिया तस्वीर है, जो हाल ही में नवीनीकृत क्षेत्र की है, जहां कई संगमरमर के स्लैब और अन्य सजावटी सामान हैं, जो परंपरा के अनुसार रखे गए हैं कब्र में चट्टान के शीर्ष पर जहां यीशु को दफनाया गया था। आप उस परंपरा को वहां तक ले जा सकते हैं जहां तक आप उसके साथ चलना चाहते हैं, जहां तक आपका मन और आपका विवेक आपको उसके साथ चलने के लिए प्रेरित करता है। मुझे पूरा यकीन नहीं है कि यह बिल्कुल वही जगह होगी, लेकिन यह निश्चित रूप से हमें याद रखने में मदद करती है।

एडिक्यूल के पास, चर्च के इस क्षेत्र के पश्चिमी हिस्से में, वह जगह है जिसे कभी-कभी अरिमथिया के जोसेफ की कब्र कहा जाता है, जहां कब्रें हैं जिनका पुरातत्वविदों द्वारा वर्णन किया गया है क्योंकि इन जगहों को कोच कहा जाता है, या एक साथ वे होंगे यहां दो कोचिम को बुलाया गया। यह एक दफन कक्ष के अंदर रहा होगा, और जिस लुढ़कने वाले पत्थर के बारे में गॉस्पेल बोलते हैं वह इस कक्ष का प्रवेश द्वार रहा होगा, न कि इन ताखों, इन कोचों को ढकने वाला लुढ़कता पत्थर, जहां शवों को दफनाया गया था। पवित्र सेपुलक़ल चर्च के ठीक भीतर, कोने के चारों ओर, एडिक्यूल के ठीक पश्चिम में, यीशु के जीवन से जुड़ी ये कब्रें हैं जो हमें एक बेहतर विचार देंगी कि यह वास्तव में उस समय कैसा रहा होगा।

तो, यह बहुत, बहुत प्रशंसनीय रहा होगा, हमारे पास इस पर विशेष विवरण नहीं है, लेकिन यह बहुत, बहुत प्रशंसनीय है कि जिस कब्र में यीशु को दफनाया गया था वह कुछ इस तरह दिखती होगी, एक खोखला कमरा जिसमें प्रवेश किया गया था कक्ष के भीतर दरवाज़े को ढँकने वाला एक लुढ़कता हुआ पत्थर इस तरह का ताक रहा होगा जिसमें शवों को दफनाया गया था। यहाँ इसी तरह का एक और मकबरा है जो जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है, वहाँ की खड़ियामय चूना पत्थर की चट्टान चारों ओर से टूट रही है। यह ऑलिव्स पर्वत के पश्चिमी ढलान पर डोमिनस फ्लेविट चर्च के मैदान में है, और आप यहां नीचे दाईं ओर स्थित मकबरे में प्रवेश कर चुके होंगे, आप प्रवेश द्वार के चौकोर कोने को देख सकते हैं, और हमारे पास यहां तीन हैं कोचिम, जहां शवों को उनके दफ़न के समय रखा गया होगा।

इस प्रकार की कब्रें आज इज़राइल में बिल्कुल भी दुर्लभ नहीं हैं, इसलिए यदि आप वहां जाकर अध्ययन करेंगे, तो आपको इस प्रकार की चीज़ देखने का पर्याप्त अवसर मिलेगा। यदि हम जॉन अध्याय 21 की ओर बढ़ते हैं और वहां जो कुछ हो रहा है उसके वर्णनात्मक प्रवाह का अनुसरण करने का प्रयास करते हैं, तो हम पाते हैं कि पुनरुत्थान के बाद यीशु के जीवन और मंत्रालय के शुरुआती दिनों में पुनरुत्थान कैसे होता है। अध्याय 21 श्लोक 1-11 हमें मछली पकड़ने की एक कहानी बताता है, यह इस बारे में कुछ नहीं कहता है कि जो मछली पकड़ कर भाग गया वह कितना बड़ा था, यह आपको बताता है कि पूरी रात मछली पकड़ने के बाद शिष्य असफल रहे, फिर भी यीशु की सलाह से वे ऐसा करने में सक्षम थे मछलियों का एक विशाल समूह पकड़ें, पद 11 के अनुसार उनमें से लगभग 153।

तो जैसे ही कहानी शुरू होती है, अध्याय 21 श्लोक 1, यीशु गलील सागर के किनारे अपने शिष्यों को फिर से दिखाई दिए, यह इस तरह से हुआ, ध्यान दें कि यह गलील सागर के पास कहता है, इसलिए ध्यान दें, हम अब तक यरूशलेम में स्पष्ट रूप से रहे हैं, अब हम गलील तक स्थानांतरित हो गए हैं। इसलिए, यीशु गलील सागर के किनारे अपने शिष्यों के सामने फिर से प्रकट हुए, यह उस संक्षिप्त परंपरा से जुड़ा है जिसे यीशु ने पुनरुत्थान के बाद शिष्यों से कहा था, मैं तुम्हें गलील में देखूंगा, और उस स्थान का संदर्भ है जिसे यीशु ने नियुक्त किया था। तो शमौन, पतरस, थोमा, नतनएल, जब्दी के पुत्र, और दो अन्य शिष्य एक साथ थे, पतरस ने कहा कि मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ, और अन्य शिष्यों ने कहा कि हम तुम्हारे साथ चलेंगे।

मुझे लगता है कि यहां एक प्रश्न उठता है कि क्या किसी तरह जब पीटर कहता है कि वह मछली पकड़ने जा रहा है, तो वह किसी तरह यीशु से अपने प्रेरितिक कमीशन को त्याग रहा है। ऐसे व्याख्याकार हैं जो इसे इस तरह से लेते हैं, कि पीटर एक ऐसा व्यक्ति बन गया है जो निंदक है, या पीटर एक ऐसा व्यक्ति बन गया है जो संदेह कर रहा है, या पीटर ने सोचा है कि मसीह के प्रति उसका इनकार इतना गंभीर था कि उसके लिए यीशु के लिए कोई मूल्य नहीं है। एक शिष्य, इसलिए वह अपने व्यावसायिक मछली पकड़ने के करियर में वापस जाने वाला है। मुझे लगता है कि इसमें बहुत अधिक पढ़ा जा रहा है, और पीटर अपने प्रेरितत्व को इतना नहीं त्याग रहा है जितना कि वह बस यह महसूस कर रहा है कि वह भूखा है और उसे खाने के लिए कुछ चाहिए, अपने परिवार की देखभाल के लिए कुछ तैयार करने की जरूरत है, उन पंक्तियों के अनुरूप कुछ।

इसलिए, मैं इसके लिए आवश्यक रूप से पीटर पर वह सारी गैर-आध्यात्मिक प्रेरणा नहीं डालूंगा, जब तक कि अन्य कारण न हों कि ऐसा किया जाना चाहिए। मैं उन्हें अभी तक नहीं ढूंढ पाया हूँ। इसलिये वे बाहर गए और सारी रात मछलियाँ पकड़ते रहे, और कुछ भी नहीं पकड़ सके।

पद 4 के अनुसार, अगले दिन सुबह-सुबह यीशु किनारे पर खड़े थे। शिष्यों को अभी तक एहसास नहीं हुआ कि यह यीशु थे। उस ने उनको पुकारकर कहा, क्या तुम ने कुछ पकड़ा है? क्या आपके पास कोई मछली है? उन्होंने कहा नहीं। तो, उन्होंने कहा, नाव के दाहिनी ओर जाल फेंकने का प्रयास करें।

मैं पढ़ रहा था कि गलील सागर में मछुआरे आज भी रात में मछलियाँ पकड़ना पसंद करते हैं, और इस बात की अधिक संभावना है कि आप सुबह में मछलियाँ पकड़ने की तुलना में रात में मछलियाँ पकड़ते हैं। मुझे नहीं पता कि यह सच है या नहीं। मैं कहीं भी मछली पकड़ने का विशेषज्ञ नहीं हूँ, गलील सागर की तो बात ही छोड़ दीजिए।

लेकिन किसी भी घटना में, ये वे लोग हैं जो मछली पकड़ना जानते थे और उन्होंने पूरी रात कुछ भी नहीं पकड़ा। तो, यीशु कहते हैं, जाल को दूसरी तरफ फेंको। तुरंत ही नेट भर गया।

श्लोक 6 के अनुसार, बड़ी संख्या में मछलियों के कारण वे इसे मुश्किल से खींच सकते हैं। पतरस को तुरंत सहज रूप से पता चलता है कि यह यीशु है। प्रिय शिष्य को इसका एहसास होता है, लेकिन एक बार फिर पीटर, हालांकि जरूरी नहीं कि उसे पहले पता चले कि क्या हो रहा है, वह पहले कार्य करता है। इसलिए जैसे ही प्रिय शिष्य कहता है कि यह प्रभु है, पीटर पानी में कूद जाता है, अपना बाहरी वस्त्र उतार देता है, और किनारे पर तैरता है।

अन्य शिष्य धीरे-धीरे किनारे की ओर बढ़ रहे हैं और मछलियों से भरे विशाल जाल को अपने साथ खींच रहे हैं। इसलिए, जब वे वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने पाया कि यीशु पहले से ही नाश्ता बना रहे हैं। वहाँ आग में कोयले जल रहे हैं और उस पर मछलियाँ और कुछ रोटी रखी हुई है।

इसलिये यीशु ने उन से कहा, जो मछली तुम ने पकड़ी है उसे ले आओ। पद 10 में, पतरस नाव पर वापस चढ़ता है और जाल को किनारे पर लाता है। 153 बड़ी मछलियाँ।

इतनी मात्रा के बावजूद जाल फटा नहीं है। यीशु ने उन्हें आने और नाश्ता करने के लिए आमंत्रित किया। लेकिन इस समय सब कुछ बहुत डरावना है।

वे यीशु से यह कहने में भी सक्षम नहीं हैं, यह आप ही हैं, है न? श्लोक 14 हमें याद दिलाता है कि यीशु पहले ही दो बार शिष्यों के सामने प्रकट हो चुके हैं। यह तीसरी बार होगा जब वह सामने आए हैं। आप वापस जा सकते हैं और इसे अध्याय 20 में जोड़ सकते हैं और पहली, दूसरी और तीसरी उपस्थिति को गिन सकते हैं।

तो, किसी ने सीधे तौर पर यीशु से यह भी नहीं कहा, यह वास्तव में आप ही हैं, है ना? या ऐसा कुछ भी. वे बस भोजन कर रहे हैं और जाहिर तौर पर हाथी सोफे पर बैठा है, और इस बिंदु पर कोई भी इसके बारे में कुछ भी कहने में सक्षम नहीं है। मुझे लगता है कि वे यीशु के बोलने का इंतज़ार कर रहे हैं।

तो, श्लोक 15 से 23 में यह प्रसिद्ध कहानी है कि यीशु ने पतरस से क्या कहा था। और वह उससे तीन बार पूछता है, श्लोक 15 से शुरू करके श्लोक 16 तक जारी रखता है, और श्लोक 17 में तीसरी बार पूछता है, क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो? और पीटर हर बार सकारात्मक पुष्टि करता है। और अंतिम बार जब पतरस को चोट लगी, तो पद 17 में कहा गया है, वह आहत हुआ क्योंकि यीशु ने उससे तीसरी बार पूछा, क्या तुम मुझसे प्यार करते हो? शायद पतरस को उसके प्रेरितिक आदेश और उसकी ईसाई प्रतिबद्धता को स्वीकार करने के लिए यीशु के इरादे के बारे में पता था।

तीन बार ऑफसेट करने के लिए और तीन बार पुष्टि करके, पीटर ने यीशु के प्रति अपने तीन बार के इनकार को मिटा दिया। तो, यीशु, तीसरी बार कहते हैं, मेरी भेड़ों को चराओ। और मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तुम छोटे थे तो तुमने वही किया जो तुम करना चाहते थे।

आपने खुद कपड़े पहने. जब आप बूढ़े होंगे तो आप अपने हाथ फैलाएंगे और कोई और आपको कपड़े पहनाएगा। कोई और तुम्हें वहाँ ले जाएगा जहाँ तुम जाना नहीं चाहते।

यह आखिरी वाक्यांश है, वे आपको वहाँ ले जाएंगे जहाँ आप नहीं जाना चाहते। यह थोड़ा डरावना लगता है, है ना? और अक्सर यह समझा जाता है कि यीशु पतरस से कह रहे हैं, तुम इसी तरह मरोगे। पद 19 में, यीशु ने पतरस से यह संकेत देने के लिए कहा कि वह किस प्रकार की मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा।

तब उस ने पतरस से फिर कहा, मेरे पीछे हो ले। मुझे लगता है कि ये सबसे पहले शब्द हैं जो यीशु ने जॉन अध्याय 1 में शिष्यों से कहे थे। तो, यह वह बातचीत है जो यीशु ने पीटर के साथ की है और यह सब अच्छा और अच्छा है। बहुत अच्छा लगता है।

यह एक महान उपदेश ग्रन्थ है, 21:15-19. हालाँकि, पीटर यह सोचकर थोड़ा विचलित हो जाता है कि प्रिय शिष्य के साथ क्या होने वाला है। श्लोक 20-23 में, पतरस ने यीशु से इसके बारे में पूछा।

वह मुड़ा और उसने देखा कि वह शिष्य जिससे यीशु प्रेम करता था, उनका पीछा कर रहा था। यह वही था, जो भोजन के समय यीशु की ओर पीठ करके बोला, हे प्रभु, वह कौन है जो पतरस की आज्ञा से तुझे पकड़वाएगा? हम पतरस और उसके प्रिय शिष्य, जिसे हम इस पुस्तक का लेखक, प्रेरित यूहन्ना मानते हैं, के बीच कुछ दिलचस्प संबंध देखते हैं। तो, पीटर कहता है, उसके बारे में क्या? श्लोक 21 में, प्रिय शिष्य के बारे में क्या? यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि क्या पतरस और उसके प्रिय शिष्य के बीच किसी प्रकार की प्रतिद्वंद्विता थी जिस तरह से उन्होंने यीशु का अनुसरण किया था।

वे दोनों शिष्यों में प्रमुख थे। शायद उनके व्यक्तित्व एक-दूसरे के प्रति द्वेषपूर्ण थे और जरूरी नहीं कि वे सबसे विशिष्ट मित्र हों जिनकी आप अपेक्षा करते हैं, लेकिन यीशु के प्रति उनकी सामान्य प्रतिबद्धता उन्हें एक साथ ले आई। तो, यीशु ने पतरस को उत्तर दिया जब पतरस कहता है, उसके बारे में क्या, प्रिय शिष्य? यीशु अनिवार्य रूप से कहते हैं, यदि मैं चाहता हूँ कि वह मेरे लौटने तक वहीं रहे, तो क्या? तुम्हें मेरा अनुसरण करना होगा, श्लोक 22 में वही दोहराना होगा जो उसने श्लोक 19 में पीटर से कहा था और अन्य समय सुसमाचार में बहुत पहले कहा था।

तो, प्रभु और पतरस के बीच इस आदान-प्रदान के कारण, दूसरों के बीच एक अफवाह विकसित हुई कि प्रिय शिष्य यीशु के वापस आने तक नहीं मरेगा। लेकिन प्रिय शिष्य, यदि वह वास्तव में यहां सामग्री लिख रहा है, तो कहता है कि वास्तव में यह वह नहीं है जो यीशु ने कहा था। उसने यह नहीं कहा कि वह यीशु के वापस आने तक जीवित रहेगा।

उन्होंने बस इतना कहा, अगर मैं चाहूँ कि ऐसा हो तो क्या होगा? इसका आप से कोई लेना देना नहीं। वह आपके लिए क्या है? तो, हमारे पास श्लोक 24 और 25 में जॉन के सुसमाचार का निष्कर्ष है। हम इसे यहां लेखक के हस्ताक्षर कह रहे हैं।

फिर वह कह रहा है, यही वह शिष्य है, यही वह शिष्य है जिसके विषय में पतरस ने पूछा था, उसके बारे में क्या? यह वह शिष्य है जो इन बातों की गवाही देता है और जिसने उन्हें लिखा है। फिर इस पुस्तक में यह इस बात की पुष्टि करने वाली सबसे निकटतम चीज़ है कि लेखक कौन था। तब ऐसा प्रतीत होता है कि यह पुस्तक कह रही है कि प्रिय शिष्य ही लेखक है।

तो, फिर वह खुद को न केवल इस विशेष घटना का बल्कि पुस्तक के दौरान कई अन्य घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी होने की पुष्टि करता है। तो, हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच है। अंतिम श्लोक हमें पिछले अध्याय के अंतिम श्लोकों की याद दिलाता है।

यीशु ने और भी बहुत से काम किये। अध्याय 21, पद 25. खैर, हम पहले से ही जानते हैं कि क्योंकि हमें अध्याय 20, पद 30 में बताया गया था, यीशु ने अपने शिष्यों की उपस्थिति में कई अन्य चिन्ह दिखाए।

हालाँकि, जॉन पुस्तक के अंत में कहते हैं, मुझे लगता है कि यदि उनमें से हर एक को लिखा गया होता, तो पूरी दुनिया में भी वे सभी किताबें नहीं समा सकतीं, जो लिखी जानी चाहिए थीं या जो संभवतः लिखी जा सकती थीं। तो यह अध्याय 20 और श्लोक 31 में कही गई बात से अलग अर्थ लेता है, कि लेखक ने खुद को उस जानकारी तक सीमित कर लिया है जो लोगों को विश्वास में लाती है। यहां वे कहते हैं, अगर हम इससे आगे बढ़ते, तो हम कहां रुक पाते? हम पूरी दुनिया को उन सभी किताबों से भर देते जो यीशु के बारे में लिखी जा सकती थीं।

तो, इस नोट पर, जॉन का सुसमाचार समाप्त होता है और यह दुखद लगता है कि अब हमें इसे पीछे छोड़ना होगा। लेकिन हम इसे पीछे नहीं छोड़ रहे हैं। हम वापस जा रहे हैं और इन पिछले दो अध्यायों में सामने आए कुछ मुद्दों पर नज़र डालेंगे।

उनमें से एक अध्याय 20 में मैरी मैग्डलीन की प्रमुखता होगी। हम जॉन के सुसमाचार में मैरी मैग्डलीन के बारे में बहुत कुछ नहीं सीखते हैं, अध्याय 19, श्लोक 25 में वापस जाकर उसके बारे में कुछ बातें ही सीखते हैं। हम शायद पाते हैं मैरी मैग्डलीन के बारे में यहां ल्यूक के सुसमाचार में अध्याय 8 में जितना हम जोहानाइन परंपरा में पाते हैं, उससे कहीं अधिक है।

आप जानते होंगे कि डैन ब्राउन की काल्पनिक पुस्तक, द दा विंची कोड में मैरी मैग्डलीन का नाम प्रमुखता से दर्शाया गया है। ऐसे लोगों का एक पूरा उद्योग है जो मैरी मैग्डलीन के बारे में किताबें लिख रहे हैं और उनके साथ बहुत विशिष्ट चीज़ें कर रहे हैं, मुझे लगता है कि मुझे कहना चाहिए, उनके संदर्भ में काल्पनिक बातें। ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि मैरी मैग्डलीन में चर्च की रुचि कुछ हद तक गुप्त रही है, अक्सर प्रारंभिक चर्च और मध्ययुगीन चर्च के पुरुष सदस्यों ने, कुछ हद तक तपस्वी मानसिकता वाले, मैरी मैग्डलीन के अतीत के विचित्र विवरणों को अनुपात से बाहर करने की कोशिश की है।

चाहे जो भी हो, इन दिनों मैरी मैगडलीन के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है। यदि आप उस पर गौर कर रहे हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप इसे नए नियम पर वापस आज़माएँ क्योंकि मुझे लगता है कि इसमें से बहुत कुछ अत्यधिक अटकलबाजी है और बिल्कुल गलत है। एक और विषय जिसे हम यहां जॉन अध्याय 20 की शुरुआत में और यहां तक कि अध्याय 21 में भी नोटिस करते हैं, वह है शिष्यों की समझ की कमी।

अध्याय 20, श्लोक 9, कहता है कि वे अभी भी धर्मग्रंथ से यह नहीं समझ पाए कि यीशु को मृतकों में से जीवित होना था। हम शायद अध्याय 2 में याद करते हैं, यीशु द्वारा मंदिर को साफ करने के बाद, वह उन लोगों को लेकर आए जिन्होंने उनसे अपने द्वारा किए गए इस मजबूत कार्य को मान्य करने के लिए एक संकेत मांगा था, ऐसा करने के लिए अपना अधिकार दिखाने के लिए आप हमें कौन सा संकेत दिखाते हैं? यीशु ने उनसे बहुत पहले अध्याय 2, श्लोक 19 में कहा था, इस मंदिर को नष्ट कर दो और मैं इसे तीन दिनों में फिर से खड़ा करूंगा। निःसंदेह, दर्शक उस पर अविश्वसनीय थे।

हेरोदेस की रीमॉडलिंग परियोजना दशकों से चल रही थी। वे कहते हैं कि यहां तक पहुंचने में 46 साल लग गए, आप इसे तीन दिनों में बढ़ाने जा रहे हैं? लेकिन पाठ कहता है कि पुनरुत्थान के बाद शिष्यों को एहसास हुआ कि वह मंदिर के बारे में बात कर रहे थे, जो कि उनका शरीर था, और पुनरुत्थान के बाद उन्होंने धर्मग्रंथ और यीशु द्वारा कहे गए शब्दों पर विश्वास किया। इसलिए, इस बिंदु तक, वे पुनरुत्थान की वास्तविकता से पूरी तरह अवगत नहीं थे।

मुझे लगता है कि सवाल बना रहेगा कि क्या यीशु ने विशेष रूप से इसका वादा किया था या क्या उसके शब्दों का सामान्य अर्थ, कि वह उन्हें फिर से देखेगा, ने उन्हें यह सोचने के लिए प्रेरित किया होगा कि वह मृतकों में से जीवित होने वाला था। मुझे लगता है कि एक और पाठ जो उपयुक्त है, वह अध्याय 12 में विजयी प्रवेश पाठ है, जहां यीशु गधे पर सवार हैं, जिसके चारों ओर एक समान रूब्रिक है। 12.16 के अनुसार, शिष्यों को पुनरुत्थान के बाद तक, जब तक कि यीशु की महिमा नहीं हुई, तब तक वह जो कर रहा था उसका महत्व समझ में नहीं आया।

एक बार फिर, अध्याय 14, श्लोक 26 में, जब यह पवित्र आत्मा के बारे में यीशु के वादे से संबंधित है, जब वह उनसे कहता है, वकील, पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम पर भेजेगा, वह सिखाएगा मैं तुम्हें सब कुछ याद दिलाता हूं और तुम्हें वह सब कुछ याद दिलाता हूं जो मैंने तुमसे कहा है। निस्संदेह, यह सब यीशु के पुनरुत्थान और महिमामंडन पर आधारित है। हम यहां अध्याय 7, श्लोक 39 जोड़ सकते हैं, जो चीजों को यीशु के पुनरुत्थान से भी जोड़ता है, जैसा कि अध्याय 16, श्लोक 16 में टिप्पणी है, जहां यीशु कहते हैं, थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे, थोड़ी देर के बाद। जबकि तुम मुझे देखोगे।

इसलिए, जैसा कि हमारे पास सिनोप्टिक्स में है, लगभग एक प्रकट, स्पष्ट पुनरुत्थान भविष्यवाणी के बजाय, जॉन इसे थोड़ा और खुला छोड़ देता है। और इसलिए, मुझे लगता है कि शिष्यों की समझ की कमी कहीं अधिक क्षम्य है, जिस तरह से जॉन में कहानी को सिनॉप्टिक परंपरा की तुलना में बताया गया है। मुझे लगता है कि अध्याय के अधिक भ्रमित करने वाले भागों में से एक,

जिस पर हमें विचार करना चाहिए वह वह तरीका है जिसमें यीशु ने अध्याय 20, श्लोक 22 और 23 में शिष्यों को आत्मा प्रदान की है।

जब हम पुस्तक में पहले की भविष्यवाणियों के बारे में सोचते हैं, तो हमें इस पर बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं होता है, यह देखते हुए कि हमने अध्याय 1 तक यीशु के बारे में सुना है, जो आत्मा से बपतिस्मा देगा। अध्याय 7 के अनुसार, यीशु ही वह है, जिसके अंतरतम से आत्मा अन्य व्यक्तियों तक प्रवाहित होगी। कम से कम, मैं उस पाठ की व्याख्या इसी तरह करना चाहूंगा।

उसने उनसे कई बार कहा है कि वह उनके पास आत्मा भेजेगा। इसलिए, यह तथ्य कि वे यहां आत्मा प्राप्त कर रहे हैं, बिल्कुल भी आश्चर्य की बात नहीं है। यह अपेक्षित होगा, यह देखते हुए कि हमने जॉन में पहले ही क्या सीखा है।

मुझे लगता है कि इस मार्ग के बारे में कुछ घबराहट और कठिनाई वह तरीका है जिसमें यीशु आत्मा प्रदान करते हैं। हमने, स्पष्ट रूप से, पर्यायवाची परंपरा में पढ़ा है, विशेष रूप से ल्यूक की कथा में, जो ल्यूक 24 से प्रेरितों के अध्याय 1 तक का चरण है, कि यीशु ने यरूशलेम में कुछ समय तक इंतजार करने के बाद शिष्यों को आत्मा का वादा किया था। थोड़ी देर प्रतीक्षा करें और अब से कुछ ही दिनों में आपको आत्मा प्राप्त हो जाएगी।

तो, जब पेंटेकोस्ट का दिन पूरी तरह से आ गया था, ईस्टर के 50 दिन बाद, यहूदियों का पर्व, सात सप्ताह, यह रविवार है जब हमारे पास अधिनियमों की पुस्तक में आत्मा का आगमन होता है। इसलिए, हम पिन्तेकुस्त के दिन और ल्यूक-एक्ट्स की उस परंपरा को अच्छी तरह से जानते हैं। तो, हम यहां जॉन में जिस तरह से आत्मा को प्राप्त किया गया है, उसे ल्यूक में जिस तरह से आत्मा को प्राप्त किया गया है, उससे कैसे संबंधित किया जा सकता है? मुझे लगता है कि इस पर संभवतः तीन या चार दृष्टिकोण हैं जिन्हें हम अपना सकते हैं।

हम परंपरा को अपना सकते हैं, लेकिन हम नहीं लेंगे, कि ये दोनों परंपराएं विरोधाभासी हैं और प्रारंभिक ईसाई धर्म का एक प्रकार है जिसमें आत्मा के आने के बारे में एक परंपरा थी, एक में दूसरी, और वह तथ्यात्मक रूप से बोल रहा है, इनमें से एक गलत होना चाहिए। मैं उस पद को लेने के लिए बिल्कुल भी इच्छुक नहीं हूँ, हालांकि कुछ लोग इसे लेंगे। दूसरी ओर, हम कह सकते हैं, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं, कि जॉन अध्याय में हमारे पास जो कुछ है वह आत्मा का एक अस्थायी अनुदान है जो उन्हें वह शक्ति और अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा जिसकी उन्हें आवश्यकता है, आध्यात्मिक समझ और अंतर्दृष्टि, लेकिन वह यह आत्मा के साथ एक अस्थायी या आंशिक बंदोबस्ती है जो उन्हें पेंटेकोस्ट तक ले जाएगी जब वे आत्मा को पूर्ण या पूर्ण रूप से प्राप्त करेंगे या आत्मा का अधिक स्थायी स्वागत करेंगे।

बहुत से लोग इसके बारे में यही दृष्टिकोण रखते हैं। मुझे पूरा यकीन नहीं है कि ऐसा ही होगा। मुझे लगता है कि इसकी अधिक संभावना है कि जॉन अध्याय 20 में हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वह समग्र रूप से बाइबिल धर्मशास्त्र के प्रकाश में, आत्मा के आने का एक प्रकार का भविष्यसूचक चित्रण है जो बाद में होगा।



तो, मुझे लगता है कि मैं कहूंगा कि अगर यह मामला है, तो हम यहां क्या कर रहे हैं जब यीशु अपने शिष्यों पर हाथ रखते हैं और उन पर सांस लेते हैं और कहते हैं, पवित्र आत्मा प्राप्त करें, वह जो कर रहे हैं वह अभिनय कर रहे हैं जो घटित होगा। पिनतेकुस्त के दिन उन्हें। वह उन से कह रहा है, सचमुच तुम्हारा यही हाल होगा, और मानो भविष्यवाणी कर रहा है। ध्यान दें कि वह उन पर सांस लेता है और कहता है, पवित्र आत्मा प्राप्त करो।

मुझे लगता है कि यह सर्वविदित है कि ग्रीक और हिब्रू में सांस के लिए जो शब्द इस्तेमाल किया जाता है वही हवा के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है और आत्मा के लिए भी वही शब्द इस्तेमाल किया जाता है। तो, चाहे हम हिब्रू में रुआच के बारे में बात कर रहे हों या ग्रीक में न्यूमा के बारे में, किसी भी तरह से, जब हम पवित्र आत्मा और सांस या हवा के बारे में बात करते हैं तो हम यहां थोड़ा सा मजाक कर रहे होते हैं। मैं यह स्वीकार करूंगा कि जॉन और ल्यूक के बीच किसी प्रकार का सामंजस्य लाने का प्रयास करने के अलावा, हम शायद यह प्रश्न भी नहीं पूछ रहे होते, न ही हमें उस समाधान की आवश्यकता होती जो मैंने अभी प्रस्तावित किया है।

यदि हमारे पास केवल जॉन का सुसमाचार होता, तो हम वास्तव में यह नहीं सोचते कि हमें पिनतेकुस्त के दिन की कोई आवश्यकता है। मुझे लगता है कि यह पूरी तरह से एक तथ्यात्मक बिंदु है। दूसरी ओर, मुझे लगता है कि जब हम संपूर्ण धर्मग्रंथों को एक पुस्तक, एक बाइबिल, एक भगवान के रूप में पाते हैं, जिन्होंने सभी लेखकों का भविष्य में मार्गदर्शन किया और जिन्होंने आध्यात्मिक रूप से उन्हें वह कहने के लिए प्रेरित किया जो वह कहना चाहते थे, तो यह हमारे लिए कभी-कभी आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार की चीजों में एकता खोजने की कोशिश करें।

तो, कम से कम मुझे ऐसा प्रतीत होता है, और आप देख सकते हैं कि आप सहमत होने या न होने के लिए निश्चित रूप से स्वतंत्र हैं, कि जब हम अंतिम विश्लेषण पर पूरे नए नियम को एक साथ रखते हैं, तो यह कम से कम प्रशंसनीय है कि यहाँ सुसमाचार में वास्तव में क्या होता है यूहन्ना वह यीशु है जो पिनतेकुस्त के दिन क्या होगा इसकी एक क्रियात्मक भविष्यवाणी कर रहा है। बेशक, थॉमस के साथ बातचीत उस विषय पर आती है जिस पर हम पहले ही पुस्तक में बहुत अधिक विस्तार कर चुके हैं, लेकिन मुझे एक बार और उल्लेख करना होगा कि थॉमस के साथ स्थिति एक और उदाहरण है जहां हमारे पास कोई ऐसा व्यक्ति है जिसका विश्वास दृष्टि पर आधारित है, विश्वास पर आधारित, यदि आप चाहें, तो एक संकेत। वास्तव में, जब श्लोक 30 के अध्याय 20 में हमें बताया गया है, यीशु ने कई अन्य संकेत दिखाए, तो ऐसा लगता है जैसे उसका पुनरुत्थान या कम से कम पुनरुत्थान के बाद थॉमस के सामने उसकी उपस्थिति को अध्याय 11 में लाजर के अंतिम पुनरुत्थान के साथ रखा जाना है। संभवतः जॉन के सुसमाचार में अंतिम संकेत के रूप में।

तो, हम जानते हैं कि कुछ लोग संकेतों के माध्यम से विश्वास में आये। हमारे पास जॉन में दोहराए गए पाठ हैं जो इसका वर्णन करते हैं। हम यह भी जानते हैं कि कुछ लोग जो संकेतों के माध्यम से विश्वास में आए, वे एक प्रकार के विश्वास में आए जो पूरी तरह से कायम नहीं था, पूरी तरह से पर्याप्त नहीं था, पूरी समझ नहीं थी, संकेत किस ओर इशारा कर रहे थे उसकी वास्तविक समझ नहीं थी, वास्तव में इसकी सच्ची समझ नहीं थी यीशु कौन थे और उनके मंत्रालय की प्रकृति क्या थी।

मुझे लगता है कि यह सब, अध्याय 8 में सबसे स्पष्ट रूप से, अध्याय 8 के अंतिम भाग में सामने आया, और मुझे लगता है कि हमें पहली बार अध्याय 2 के अंत में इससे परिचित कराया गया है। अध्याय 2 में जो व्यक्ति थे यीशु से प्रभावित होकर विश्वास किया कि वह कोई था क्योंकि उसने जो चिन्ह दिखाए वे अध्याय 3 में यीशु के बारे में निकुदेमुस की धारणा के अनुरूप हैं। एक बार फिर, जॉन में यहाँ आखिरी बार, ऐसे लोग हैं जिन्हें यीशु के चिन्हों के बारे में बताया गया है ताकि वे विश्वास करें, कि वे जीवन पाएं। यह सब सच है और संकेतों पर आधारित विश्वास के बारे में निश्चित रूप से ऐसा कुछ भी नहीं है जो आवश्यक रूप से अपूर्ण विश्वास हो। ऐसे लोग हैं जो संकेतों को देखते हैं और जो संकेतों से परे उस व्यक्ति, मंत्रालय, मसीहा को देखते हैं जिसे ईश्वर ने चाहा था।

हालाँकि, ऐसे लोग भी थे जिन्होंने संकेतों को देखा और केवल उसी प्रकार के मसीहा को देखा जिसे वे पहले से ही चाहते थे, जिसे प्राप्त करने के लिए वे पहले से ही अपनी संस्कृति से अनुकूलित थे। संकेत कभी-कभी उन लोगों को प्राप्त होते थे जिन्हें आज पुष्टिकरण पूर्वाग्रह कहा जाता है। उन्होंने संकेतों में उस व्यक्ति को देखा जिसे देखने के लिए उन्हें पहले से ही तैयार किया गया था।

उन्होंने वही देखा जो वे देखना चाहते थे, जो वास्तव में यीशु नहीं था। हालाँकि, अन्य लोग संकेतों के माध्यम से वास्तविक विश्वास में आने में सक्षम थे और यीशु यहाँ उस प्रकार के व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं। हालाँकि, ऐसे लोग भी हैं जो किसी भी संकेत के अलावा भी वास्तविक विश्वास में आ सकते हैं।

जैसा कि यीशु ने थॉमस से कहा, तुमने मुझे देखा है इसलिए विश्वास किया है, धन्य वे हैं जिन्होंने नहीं देखा और विश्वास किया है। यहां हमारे पास महान कलाकार कारवागियो द्वारा बनाया गया थॉमस का चित्र है। इसमें वास्तव में थॉमस ने अपनी उंगली यीशु के बगल में डाल दी है।

पाठ बिल्कुल निर्दिष्ट नहीं करता है कि थॉमस ने ऐसा किया था। यह काफी दिलचस्प है कि जिस तरह से उसे यहाँ चित्रित किया गया है वह वास्तव में यीशु के धड़ को ध्यान से देख रहा है और वास्तव में वह यीशु के शरीर में अपनी उंगली डाल रहा है। आपने यहां यीशु के बाएं हाथ पर कील का निशान भी देखा है।

मुझे लगता है कि कला के ये क्लासिक टुकड़े इस मायने में दिलचस्प हैं कि वे परिच्छेद की व्याख्या को दृश्य तरीके से प्रदर्शित करते हैं। एक बहुत ही अलग प्रकार की कला अब जॉन अध्याय 1 में यीशु को चित्रित कर रही है जैसे कि वे पूरी रात मछली पकड़ने के बाद झील में शिष्यों से मिलते हैं और कुछ भी नहीं पकड़ते हैं, फिर उन्हें नाव के दूसरी तरफ जाल फेंकने का निर्देश देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पतरस भूमि पर यीशु को देखने के लिए वहाँ ब्रेस्टस्ट्रोक कर रहा है।

अगर हम इस घटना को मनाने के लिए जगह ढूँढने के लिए आज इज़राइल जाते, तो कैपेरनम के दक्षिण-पश्चिम में, मिगडाल जंक्शन के कोने के आसपास, तब्बा से भी अधिक पश्चिम में एक छोटा सा चर्च होता है, जिसे सेंट पीटर की प्राइमसी चर्च कहा जाता है। और मगडाला की बाइबिल

साइट। किनारे पर यह छोटा सा काले पत्थर का चर्च वह चर्च है जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूँ और इसका उद्देश्य उन घटनाओं को मनाने के लिए एक साइट पर बनाया जाना है जिन्हें हम अभी जॉन अध्याय 21 में देख रहे हैं। यह दिलचस्प है कि इस तस्वीर में पानी का स्तर काफी कम है और आपको चर्च के चारों ओर बहुत सारे पत्थर दिखाई देते हैं।

अन्य चित्र जो मैंने देखे हैं उनमें पानी इन चट्टानों के बराबर ऊपर आ रहा है जो यहीं चर्च के किनारे हैं। यह चर्च इसके शीर्ष पर बनाया गया है, मुझे लगता है कि आप इसे बोल्टर कहेंगे, यह चट्टान का निकला हुआ भाग है ताकि एक बार जब आप चर्च में जाएं तो आप पाएंगे कि ये चट्टानें अभी भी वहां हैं, मुझे लगता है कि आप इसे मंच कहेंगे चर्च, चर्च की वेदी. वास्तव में, यदि आप आज वहां जाएंगे तो आप देखेंगे कि जो चट्टान दीवार के बाहर थी वह यहां तक बनी हुई है और उन्होंने चट्टान के ठीक ऊपर दीवार बना दी है, उस स्थान को लैटिन में मेन्सा क्रिस्टी कहा जाता है, ईसा मसीह की मेज।

तो, यहां एक तरीका है कि वे उस चट्टान को याद करने की कोशिश कर रहे हैं जिस पर यीशु ने उस दिन अपने शिष्यों को खेलाने के लिए, कोयले पर मछली भूनकर भून ली थी। तो, हम इस तरह की जगहों को देखते हैं और कहते हैं, शायद यह वह जगह थी और शायद नहीं, लेकिन यह ऐसी जगह थी। फिर सीधे तौर पर जॉन अध्याय 21 की ओर मुड़ते हैं और यहां चल रही कुछ चीजों के बारे में सोचते हैं, मुझे लगता है कि इस चीज़ का सिनोप्टिक परंपरा से संबंध दिलचस्प है, और जिस तरह से यीशु गलील में शिष्यों से मिलते हैं और उनसे बात करते हैं। और उन्हें वहां नियुक्त करता है, जो जॉन अध्याय 20 में कमीशन के प्रकाश में दिलचस्प है जो स्पष्ट रूप से यरूशलेम में हुआ था।

इसलिए, दोनों परंपराओं को एक साथ बांधने में हमारे पास कुछ मुद्दे हैं और इस कक्षा में हमारा उद्देश्य उस पर गहराई से विचार करना नहीं है, लेकिन हम इन चीजों से अवगत हैं और शायद आप इसका पूरी तरह से अध्ययन करने का मन बना रहे हैं और मुझे आशा है कि यदि आप ऐसा महसूस करते हैं कि आपको यहीं प्रेरित किया जा रहा है तो आप ऐसा करेंगे। जॉन के अध्याय 21 में पीटर की प्रमुखता स्पष्ट है। हम अध्याय 20 में याद करते हैं कि जब यीशु के शरीर की खोज की बात आती है, तो पीटर और प्रिय शिष्य दोनों कब्र की ओर दौड़ते हैं।

प्रिय शिष्य तेजी से दौड़ता है, और बाहर की ओर खड़ा होकर अंदर देखता है। पीटर आता है और कब्र में जाने वाला पहला व्यक्ति होता है। पीटर की प्रमुखता इसलिए भी देखी जाती है क्योंकि वह ही वह व्यक्ति है जो उन्हें मछली पकड़ने जाने का सुझाव देता है।

जैसे ही पतरस ने उन्हें मछली पकड़ने जाने का सुझाव दिया, पद 3 कहता है, वे कहते हैं, हम तुम्हारे साथ चलेंगे। जैसे ही उन्होंने इस आदमी को जाल को दूसरी तरफ फेंकने के लिए कहते हुए सुना, सबसे पहले उनके प्रिय शिष्य ने पहचान लिया कि यह यीशु हैं। पतरस यीशु को देखने के लिए पानी में कूदने वाला पहला व्यक्ति है।

इसलिए, अगर हम पीटर के चरित्र को जॉन के गॉस्पेल और सिनोप्टिक परंपरा से भी जानते हैं तो हमें इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। वह वह व्यक्ति है जो आमतौर पर उतावला होता है, जिसमें धैर्य

की कमी होती है और जो पहले बोलता है। कभी-कभी वह अच्छा बोलता है, कभी-कभी उतना अच्छा नहीं, लेकिन वह किसी न किसी तरीके से बोलता और कार्य करता रहता है।

इसलिए, मुझे लगता है कि पीटर की प्रमुखता यहां दिलचस्प है, विशेष रूप से क्योंकि यह हमें उस तरीके की ओर ले जाती है जिसमें यीशु पद 15 से 17 में पीटर से तीन बार पूछते हैं कि क्या वह उससे प्यार करता है। इसलिए, इस बात पर काफी चर्चा हुई है कि इन सवालों को किस तरह से प्रस्तुत किया गया है और हमारे पास पुनरावृत्ति क्यों है। और हमारे यहां तीन बार दोहराव होने का कारण यह है कि हमें स्थिति का वर्णन करने के लिए अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल होता है।

तो, आपने यहां पीटर और यीशु पर विभिन्न प्रकार की शिक्षाएं और उपयोग किए गए विभिन्न ग्रीक शब्दों को सुना होगा। हम यह नहीं मान रहे हैं कि आपमें से जो लोग वीडियो देख रहे हैं, उनके पास ग्रीक का बहुत सारा ज्ञान है। यदि आपके पास कुछ ग्रीक भाषा है, तो आप समझ जाएंगे कि मैं क्या कह रहा हूं।

यदि नहीं, तो मैं इसे इस तरह से तोड़ने की कोशिश करूंगा जिससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि किस तरह से अक्सर गद्यांश पढ़ाया जाता है। मुख्य बात जो इस अनुच्छेद को पढ़ाते समय सामने आती है वह यह है कि यहाँ प्यार के लिए दो अलग-अलग ग्रीक शब्दों का इस्तेमाल किया गया है, एक अगापाओ , दूसरा फिलियो । अगापाओ प्यार के लिए एक शब्द है जो अक्सर एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाले प्यार, एक तर्कसंगत तरह के प्यार, एक ऐसे प्यार से जुड़ा होता है जो जानबूझकर प्रतिबद्धता पर आधारित होता है।

फिलियो प्रेम का वह प्रकार है जो अपने संदर्भ में भावनात्मक प्रकार के प्रेम या बहुत उत्कट प्रकार के प्रेम, बहुत गहरे बैठे और गहराई से महसूस किए गए प्रेम पर ज़ोर देता है, इतना ज़रूरी नहीं कि वह प्रेम तर्कसंगत रूप से आधारित हो। हालाँकि, मैंने अभी जो कहा है, वह केवल शब्दों के कुछ उपयोगों से लिया गया निष्कर्ष है, सभी से नहीं। और शब्दों का उपयोग अक्सर ऐसे तरीकों से किया जा सकता है जो लगभग विनिमेय हों, यदि पूरी तरह से विनिमेय न हों।

वास्तव में, यदि आपको एकरूपता प्राप्त करनी है और अध्ययन करना है कि इन दो शब्दों का उपयोग कैसे किया जाता है, तो एक कंप्यूटर डेटाबेस का उपयोग करें, उन्हें खोजें, जो भी हो, आप पाएंगे कि जॉन में अन्य स्थानों पर अगापाओ शब्द और फिलियो शब्द का उपयोग किया गया है। एक बहुत ही पर्यायवाची फैशन. ऐसे लोग हैं जो कहेंगे कि अगापाओ प्रकार का प्रेम दिव्य प्रेम है, फिलियो प्रकार का प्रेम मानव प्रेम है। हालाँकि, जॉन में ऐसे ग्रंथ हैं जहां मनुष्य, अगापाओ , और जॉन में ऐसे ग्रंथ हैं जहां भगवान, फाइलोस हैं ।

तो यह सच नहीं है. इसलिए, हमें यह समझने में सावधानी बरतनी होगी कि हम शब्दों का अर्थ उनकी व्युत्पत्ति करके और यह सोचने की कोशिश करके नहीं कि उनके भीतर कोई जादुई इकाई है जो उन्हें एक विशिष्ट अर्थ देती है, बल्कि यह देखकर निर्धारित करते हैं कि शब्दों का वास्तव में उपयोग कैसे किया जाता है और खोज की जाती है। विभिन्न संदर्भों में शब्दों की शब्दार्थ सीमा जिसमें वे पाए जाते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमें यह आभास होता है कि शायद यहां

जो कुछ हो रहा है, वह प्यार के प्रकारों के बीच अंतर करने का प्रयास करने का एक तरीका नहीं है, बल्कि मूल रूप से शब्दावली शब्दों के कारण पाठ को पढ़ने के लिए अधिक दिलचस्प बनाने का एक साहित्यिक तरीका है। दोहराव नहीं।

तो, जब यीशु पतरस से कहते हैं, क्या तुम मुझसे प्यार करते हो? और पीटर कहता है, हाँ, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। इसका अक्सर यह अर्थ लगाया जाता है कि यीशु अधिक गहन महत्व वाले शब्द का उपयोग करता है। पीटर ने जवाब देते हुए कहा, हाँ, कुछ इस तरह।

दूसरे शब्दों में, वह पूरी तरह से दैवीय प्रकार के प्रेम या तर्कसंगत, स्वैच्छिक प्रतिबद्धता प्रेम के स्तर तक नहीं आ रहा है जिसके लिए यीशु उससे पूछ रहा है। इसके बजाय वह जो कह रहा है वह यह है, हाँ, मैं तुम्हारे बारे में अच्छा महसूस करता हूँ। हाँ, हाँ, मैं तुम्हें पसंद करता हूँ, उस प्रकृति के अनुरूप कुछ।

इसलिए, यदि आप इसे इस तरह से लेते हैं, तो अंततः उससे एक बार यह पूछने और यह उत्तर पाने के बाद, उससे दो बार पूछने पर, यह उत्तर प्राप्त करने पर जो संतोषजनक से कम है, यीशु फिर पतरस के स्तर पर आ जाता है। और अंततः, पीटर तीसरी बार कहने में सक्षम है, हाँ, हाँ, मैं कहता हूँ। तो पाठ की इस व्याख्या में, यीशु पतरस से जो कुछ प्राप्त कर सकता है वह लेता है।

वह उसे उच्च स्तर की प्रतिबद्धता के लिए चुनौती देता है। और पीटर ईमानदार है और कहता है, ठीक है, मेरे पास वह नहीं है, लेकिन मेरे पास यह है। और अंत में, यीशु कहते हैं, ठीक है, मुझे जो मिल सकता है मैं ले लूँगा।

मुझे लगता है कि अनुच्छेद को समझने में शायद यह एक बड़ी गलती है। उपयोग किए गए दो शब्दों के बीच अपेक्षाकृत अनुमानित अंतर पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, मुझे लगता है कि बेहतर होगा यदि हम इसे शैलीगत उद्देश्यों के लिए केवल एक साहित्यिक भिन्नता तक सीमित कर दें और यह महसूस करें कि अनुच्छेद का उद्देश्य यहां शब्दों को काटना नहीं है। और संभावित अर्थ के और भी बारीक बिंदु हैं, लेकिन तथ्य यह है कि यीशु इसे तीन बार घटित करते हैं। तो, मैं कहने का साहस करता हूँ कि यीशु वास्तव में यहाँ पीटर की नाक रगड़ रहा है और उसे उसके तीन गुना इनकार की याद दिला रहा है।

लेकिन यह पीटर के लिए बहुत दुखद रहा होगा। लेकिन मुझे लगता है कि इसे ही हम कभी-कभी कठिन प्रेम कहते हुए सुनते हैं। एक तरह से, यीशु उसे ठीक करने के लिए पतरस को चोट पहुँचा रहा है।

तो, पतरस को अपने इनकारों की याद दिलाकर थोड़ा दुख होगा, लेकिन उसे यह एहसास करने में मदद मिलेगी कि यीशु उसे इससे मुक्त कर रहा है और उसे भेड़ों को चराने, अपने लोगों की देखभाल करने के लिए नए सिरे से कमीशन दे रहा है। इसलिए इन शब्दों को थोड़ा अलग मानने और मनोवैज्ञानिक रूप से यह सोचने की कोशिश करने के बजाय कि यीशु के दिमाग में क्या चल रहा है और पतरस के दिमाग में क्या चल रहा है, आइए यहां स्पष्ट तथ्यों पर ही टिके रहें। पतरस ने तीन बार यीशु का इन्कार किया।

यीशु ने पतरस से तीन बार यीशु के प्रति अपनी निष्ठा और प्रेम की पुष्टि करने की अपेक्षा की। एक और कारण जिसके कारण हमें नहीं लगता कि मामला प्रेम के लिए उपयोग किए जा रहे विभिन्न शब्दों में है, वह यह है कि जब हम इस पाठ के बाकी हिस्सों को देखते हैं, तो यीशु भेड़ों की देखभाल के लिए अलग-अलग शब्दावली का उपयोग कर रहे हैं। जब वह पीटर से कहता है, अनिवार्य रूप से, यदि तुम मुझसे प्यार करते हो, तो तुम्हें मेरे लोगों से भी प्यार करना होगा।

आप मेरे प्रति अपनी प्रतिबद्धता के बारे में तब तक बात नहीं कर सकते जब तक कि आप मेरे अनुयायियों और आपके मिशन के प्रति प्रतिबद्ध न हों जिसके लिए मैं अब आपको सिफारिश कर रहा हूँ वह है भेड़ों की देखभाल करना, मेरे लोगों की देखभाल करना। मुझसे मत कहो कि तुम मुझसे प्यार करते हो और फिर मेरे लोगों को अकेला छोड़ दो। मैं इसे स्वीकार नहीं करता।

लेकिन जैसे ही यीशु इसे तीन बार प्रकट करते हैं, वह दो अलग-अलग शब्दों का उपयोग कर रहे हैं जिनका हम आम तौर पर चरवाहा या देखभाल या चरागाह या जो कुछ भी अनुवाद करेंगे। वह ग्रीक में बोस्को शब्द के साथ-साथ पोइमिनो शब्द का भी उपयोग कर रहा है। वास्तव में, वह भेड़ों के लिए दो अलग-अलग शब्दों का भी उपयोग कर रहा है।

वह अर्नेओन के बारे में बात कर रहा है, जिसका मेरे विचार से मेमनों से अधिक संबंध है, और प्रोबिटोन शब्द का, जिसका संबंध झुंड, भेड़ों से है जो उनकी परिपक्वता में अंधाधुंध हैं। तो, तथ्य यह है कि यीशु भेड़ों के लिए अलग-अलग शब्दों का उपयोग कर रहे हैं, मुझे नहीं लगता कि वह यहां यह कह रहे हैं कि जूनियर चर्च की देखभाल करें और वयस्कों या उस जैसी किसी चीज़ की भी देखभाल करें। वह बस कह रहा है, इसमें थोड़ा सा मिश्रण करने और इसे पढ़ने के लिए और अधिक दिलचस्प बनाने के लिए अलग-अलग शब्दों का उपयोग कर रहा है ताकि आप एक ही शब्द को बार-बार दोहराए जाने से देखकर ऊब न जाएं।

तो, हम यूहन्ना 21, 15 से 17 की इस सामग्री से जो सीखेंगे, वह यह है कि एक तरफ, बस यह सोचें कि यीशु पतरस से कितना प्यार करता है कि वह उसके इनकारों को सह लेगा और बाद में उसके पास वापस आएगा और अनिवार्य रूप से उसे माफ कर देगा और उसे अपनी भेड़ों की देखभाल करने की सलाह दें। मैं अभी अपने एक मित्र से बात कर रहा हूँ जिसके जीवन में पाप के संबंध में कुछ समस्याएं थीं, एक ऐसा पाप जिसका उसने पश्चाताप किया है और नए सिरे से प्रभु का अनुसरण करना शुरू कर दिया है। फिर भी कभी-कभी, उसके पास ऐसे क्षण आते हैं जब वह सोचता है, क्या मैं वास्तव में ट्रैक पर वापस आ गया हूँ या नहीं? क्या मैं पटरी पर वापस आ सकता हूँ? क्या मैं वास्तव में इसे कभी पीछे छोड़ पाऊंगा? और मैं उससे एक से अधिक बार कहता हूँ, यदि परमेश्वर पतरस को उसके अपराध के लिए क्षमा कर सकता है, तो परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हें भी क्षमा कर सकता है।

मुझे लगता है कि हममें से कोई भी वास्तव में ईश्वर के प्रेम की विशालता और उसकी दया की गहराई और हमारे प्रति उसकी कृपा को नहीं जानता है। शायद हमें स्वयं को क्षमा करना ईश्वर की अपेक्षा स्वयं को क्षमा करने से अधिक कठिन लगता है। इसलिए, मुझे लगता है कि हमें पीटर जैसे किसी व्यक्ति से साहस लेने की ज़रूरत है, जो अपनी ताकत से नहीं, बल्कि ईश्वर की कृपा से अपनी गलतियों से उबरने में सक्षम था, और इस तरह से यीशु द्वारा अनुशंसित किया गया था।

तो, इस पाठ से एक सबक यह है कि हम अपने लिए ईश्वर के प्रेम से कितना कुछ ले सकते हैं, यह महसूस करते हुए कि अनुग्रह, जैसा कि पुराने भजन में कहा गया है, हमारे सभी पापों से अधिक है। दूसरी ओर, हम इस पाठ से यह महसूस करके कुछ ज़िम्मेदारी लेंगे कि हम कितना भी कहें कि हम यीशु से प्यार करते हैं, हम पृथ्वी पर उनके लोगों की देखभाल करके उनके प्रति अपना प्यार प्रदर्शित करेंगे। इसलिए, अगर हमें लगता है कि हमने उससे प्यार किया है, तो हम अनिवार्य रूप से उसकी भेड़ों की देखभाल के लिए उसकी सेवा में शामिल हो रहे हैं।

क्योंकि अगर वह हमसे इतना प्यार करता है कि हमें माफ कर दे, और वह हमसे उम्मीद करता है कि हम उससे प्यार करें और उन लोगों से प्यार करें जिनके लिए वह मर गया और फिर से जी उठा और चर्च का मुखिया है। हमने थॉमस की एक पेंटिंग देखी। यहाँ पीटर का एक और है।

मुझे यह भी काफी दिलचस्प लगता है। पतरस के रूप में, उसके सारे उतावलेपन के लिए, उसके सारे धैर्य की कमी के लिए, उसकी सारी बातों को उगलने के लिए, कभी सही, कभी गलत, पतरस को यहाँ यीशु ने बताया है कि किसी दिन वह अपनी बाहें फैलाने में सक्षम नहीं होगा और खुद कपड़े पहनो और व्यवसाय की देखभाल करो जैसा वह चाहता है। दरअसल, किसी दिन दूसरे लोग उसके लिए ऐसा करेंगे और उसे उन जगहों पर ले जाएंगे जहाँ वह नहीं जाना चाहता।

मुझे लगता है कि आम तौर पर इसकी व्याख्या की जाती है, यह इंगित करने के लिए कि किसी दिन पीटर को सताया जाएगा और विश्वास के लिए शहीद किया जाएगा, बहुत संभव है, सही होगा। कारवागियो यहाँ पीटर को दिखाने का प्रयास कर रहा है। ध्यान दें कि वह अपनी आँखों से अपने हाथ में बड़ी कील की ओर देख रहा है।

यह कोई बहुत सुन्दर चित्र नहीं है, मैं आपको अनुमति देता हूँ। जैसे ही आप पीटर को वहाँ देखते हैं, ऐसा लगता है जैसे उसके चेहरे पर भाव एक स्मृति है। शायद वह इस समय को देख रहा है जब उसे अब वह बात याद आ रही है जो यीशु ने उससे उस दिन के बारे में कही थी जब कोई उसे वहाँ ले जाएगा जहाँ वह नहीं जाना चाहता था और अपनी बाहों को इस तरह फैलाएगा जैसे वह नहीं चाहता था कि उन्हें फैलाया जाए।

आपने ध्यान दिया कि यह पाठ प्रारंभिक चर्च परंपरा को भी दर्शाता है, जिसे हम आवश्यक रूप से धर्मग्रंथों से प्राप्त नहीं करेंगे, कि पीटर को क्रूस पर उसके सिर के साथ उल्टा क्रूस पर चढ़ाया गया था। हम बाइबिल के अनुसार इसके बारे में निश्चित नहीं हैं, लेकिन आप देखते हैं कि वह व्यक्ति रस्सी खींच रहा है और पीटर को उल्टा सूली पर चढ़ाने के लिए सूली को सीधा कर रहा है। मैं उस प्रथा की ऐतिहासिक सत्यता के बारे में निश्चित नहीं हूँ, कि क्या इसे अन्य ग्रंथों में दिखाया जा सकता है या नहीं, लेकिन इसे और अधिक पूरी तरह से खोजना दिलचस्प होगा।

जहाँ तक समग्र रूप से जॉन के सुसमाचार की बात है तो जॉन 21 हमारे लिए क्या कर रहा है? हम इस नोट पर निष्कर्ष निकालेंगे। साहित्य के संदर्भ में, कहानी कहने के संदर्भ में, कथानक को पूर्ण समाधान तक लाने के संदर्भ में, मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि जॉन 1 में यीशु के पहले शिष्यों में से एक पीटर था। यीशु का अंतिम शिष्य पीटर है।

दूसरे शब्दों में, यहाँ और वहाँ जॉन का अधिकांश ध्यान पीटर पर है, और यहाँ हम पीटर के साथ पूर्ण चक्र में आ गए हैं। हमने अध्याय 1 में उसके साथ जॉन द बैपटिस्ट के शुरुआती अनुयायियों में से एक के रूप में शुरुआत की जो यीशु का अनुसरण करते हैं। यहां अध्याय 21 में, उसे मंत्रालय में बहाल किया गया है।

निश्चित रूप से, जब तक जॉन ने लिखा था, संभवतः पहली शताब्दी के अंत में या उस समय तक, पीटर की चर्च में प्रमुखता बनी हुई थी। जब यह संदेश पढ़ा गया और चर्च में इसे समझा गया, तो मंत्रालय के लिए पीटर का दायित्व मजबूत हो गया होगा और इस पाठ से चर्च में उसकी स्थिति की पुष्टि हो गई होगी। पाठ कुछ हद तक प्रिय शिष्य और पीटर द्वारा निभाई गई पूरक भूमिकाओं को भी स्पष्ट करता है।

हालाँकि, उन्हें पहली शताब्दी के अंत में चर्च के भीतर विभिन्न गुटों, विभिन्न समूहों द्वारा देखा गया होगा और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों को शायद इससे मदद मिली होगी। अंततः, प्रारंभिक चर्च परंपरा में पीटर रोम से जुड़ा हुआ है। अंततः, प्रिय शिष्य जॉन पश्चिमी एशिया माइनर में इफिसस से बंधा हुआ है।

वे इन विभिन्न स्थानों पर अत्यधिक सम्मानित नेता रहे होंगे। इस पाठ ने उन्हें यह पृष्ठभूमि दिखा दी होगी कि जब यह पाठ लिखा गया होगा तब उन्होंने कैसे वही बनना शुरू किया था जो वे थे। तो, शाब्दिक रूप से, मुझे लगता है कि जॉन में प्रिय शिष्य और पीटर की संबंधित भूमिकाएँ इसी तरह निष्कर्ष पर पहुँचती हैं और पूर्ण चक्र में आती हैं।

कैनोनिक रूप से, जब हम सोचते हैं कि हम पिछले और इससे भी महत्वपूर्ण निम्नलिखित ग्रंथों के प्रकाश में जॉन के सुसमाचार को कैसे समझते हैं, तो इससे हमें पीटर की भूमिका के बारे में समग्र बाइबिल धर्मशास्त्र के संदर्भ में समझने में मदद मिलती है। जैसा कि हम प्रेरितों के काम की पुस्तक से जानते हैं, विशेष रूप से प्रेरितों के काम अध्याय 15 तक, पतरस की बहुत प्रमुखता है। पतरस वह है जो पिनतेकुस्त के दिन उपदेश देता है।

पतरस वह है जो अन्यजातियों के लिए सुसमाचार खोलता है, पॉल नहीं। अक्सर लोग यह मान लेते हैं कि पॉल ने बाद में खुद को अन्यजातियों के लिए प्रेरित बताया और यह वास्तव में उसका मंत्रालय था। लेकिन जब हम प्रेरितों के काम अध्याय 10 पढ़ते हैं, तो यह पतरस है जो कुरनेलियुस के घराने में बोलता है, न कि पॉल।

पॉल वास्तव में जल्द ही वहां तस्वीर में आता है और पॉल अधिनियम 13 में पहली मिशन यात्रा करता है और अन्यजातियों का गवाह बनता है और अन्यजातियों के लिए प्रेरित के रूप में जाना जाता है। लेकिन यदि आप अध्याय 15, यरूशलेम की तथाकथित परिषद, को पढ़ना जारी रखते हैं, जहां वे चर्च की जनसांख्यिकी और उसमें अन्यजातियों की घुसपैठ और उन्हें चर्च में कैसे शामिल किया जाए, इस पर चर्चा कर रहे हैं, तो पीटर ही वह व्यक्ति है जो पॉल का समर्थन करता है और कहता है कि पॉल का मंत्रालय वास्तव में वह तरीका है जिससे हम चाहते हैं कि चर्च आगे बढ़े। तो, पीटर वहां पॉल का समर्थन कर रहा है और यह एक तरह से आखिरी बार है जब हमने प्रेरितों की किताब में पीटर के बारे में सुना है।



लेकिन पीटर उस बिंदु तक एक्ट्स में सभी तरह से बड़ा दिखता है। मुझे ऐसा लगता है कि प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म में, हम अक्सर पॉल को बड़ा महत्व देते हैं और पीटर को गंभीर रूप से कम आंकते हैं। मुझे लगता है कि यह एक गलती है जब हम पीटर के बाइबिल धर्मशास्त्र को देखते हैं, गॉस्पेल में उनकी प्रमुख भूमिका है, जिस तरह से वह अधिनियमों की पुस्तक में शुरू से ही चर्च का नेतृत्व करते हैं, कम से कम पुस्तक के मध्य तक, और कम से कम दो पत्र जो हमारे पास पतरस के हैं जो उसने अपने उपदेश से हमारे लिए छोड़े हैं।

चाहे हम पीटर को रोम के पहले बिशप के रूप में सोचें या नहीं, चाहे हम इससे भी आगे बढ़कर यह सोचें कि पीटर ने प्रेरितिक उत्तराधिकार शुरू किया जो आज तक जारी है या नहीं, और मैं नहीं करता, चाहे हम ऐसा कुछ भी करें, हमें निश्चित रूप से पीटर को वह प्रमुखता देने की ज़रूरत है जो प्रारंभिक चर्च और बाइबिल धर्मशास्त्र में उनकी भूमिका के लिए उचित है। कुल मिलाकर, मुझे लगता है कि धर्मशास्त्रीय दृष्टि से, जॉन 21 हमें बहुत मार्मिक और स्पष्ट तरीके से उस चीज़ की याद दिलाता है जिसे हमें पहले से ही जानना चाहिए, अगर हम किसी से प्यार करने का दावा करते हैं, तो हम वही करेंगे जो वे कहते हैं। यह जॉन अध्याय 15 में बिल्कुल स्पष्ट है, जहां यीशु कहते हैं कि यदि तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे।

यीशु ने यहाँ पतरस को तीन बार वह सच्चाई बताई। क्या तुम मुझसे प्यार करते हो? क्या तुम मुझसे प्यार करते हो? क्या तुम मुझसे प्यार करते हो? हां हां हां। ठीक है, यदि आप कहते हैं कि आप मुझसे प्यार करते हैं, तो मुझे दिखाएँ कि आप मुझसे प्यार करते हैं, मेरे लोगों की देखभाल करके मुझे दिखाएँ कि आपका दिल कहाँ है।

निश्चित रूप से, आज इस वीडियो को सुनने वाले हम सभी को, जिनमें मैं भी शामिल हूँ, लगातार यह याद दिलाने की आवश्यकता है कि यदि हम यीशु मसीह से प्रेम करने वाले व्यक्ति होने का दावा करते हैं, तो हम उनके मिशन और उन लोगों से भी प्रेम करेंगे जो उस मिशन का हिस्सा. तो जब हम जॉन अध्याय 21 पर चिंतन करते हैं तो प्रभु हमें इसके लिए दोषी ठहराएं और हमें उस संकल्प में मजबूत करें। यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं।

यह सत्र संख्या 20 है, यीशु जी उठे हैं और शिष्यों को दर्शन देते हैं। यूहन्ना अध्याय 20 श्लोक 1 से अध्याय 21, श्लोक 25 तक।